चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 143, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 21 जून 2023 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

'भारत में पीओके का विलय चाहते हैं वहां के लोग'

मोदी के नेतृत्व में भारत एक नई यात्रा की ओर आगे बढ़ चुका है: योगी

अंबेडकरनगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि एक तरफ जहां भारत से अलग हुआ पाकिस्तान अपने कर्मों की सजा भुगत रहा है। उसके नागरिक भूख से मर रहे हैं। वहां एक किलो आटा के लिए छीना झपटी मची हुई है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) के लोग पाकिस्तान के साथ नहीं रहना चाहते हैं। वहां के लोग मांग कर रहे हैं पीओके का विलय भारत में हो जाए। वहीं दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत एक नई यात्रा की ओर आगे बढ़ चुका है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि आज दुनिया में जब भी कोई संकट आता है तो पूरा विश्व आशा भरी निगाहों से भारत की तरफ देखता है। उन्होंने कहा कि 2014 के पहले तक यही भारत आतंकवाद, नक्सलवाद और माओवाद से ग्रसित था। आज कोई भी दुश्मन भारत की तरफ आंख उठाकर नहीं देख सकता है। देश के 15-18 जिलों में फैला माओवाद और नक्सलवाद अब 3-4 जनपदों तक सीमित रह गया है। भारत की धरती से बहुत ही जल्द माओवाद और नक्सलवाद पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी के नौ साल भारत के इतिहास के लिए बेमिसाल हैं। योगी ने मंगलवार को केंद्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर के साथ अंबेडकरनगर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने 1,212 करोड़ रुपये की 2,339 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि हमें प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत के विकास के प्रति पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करना होगा। इसके लिए आवश्यक होगा कि हम गांव की इकाइयों को भी छुएं। 21 जून को अन्तर-राष्ट्रीय योग दिवस है। इस दिवस पर दुनिया भारत की ऋषी परंपरा के प्रति अपना आभार व्यक्त करेगी, आप सब भी अपने अमृत सरोवर, पंचायत भवन, ग्राम सचिवालय या किसी भी सार्वजनिक स्थल पर प्रातः योगाभ्यास करें और योग को आम जन तक पहुंचाने का कार्य करें। यह हम सबकी जिम्मेदारी बनती है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अब समय आ गया है कि नए भारत के निर्माण के लिए, जाति, मत और मजहब से ऊपर उठकर राष्ट्र प्रथम के लिए कार्य करें। पहले हम देश के बारे में सोंचे। हमारा देश सुरक्षित रहेगा तो हम भी सुरक्षित रहेंगे। उन्होंने कहा कि परिवारवाद, जातिवाद, तुष्टीकरण और भाई-भतीजावाद की राजनीति करते हैं, वह देश का हित नहीं कर सकते हैं। देश का हित करने के लिए जज्बा चाहिए। त्याग चाहिए। बलिदान की भावना चाहिए। राष्ट्र के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव होना चाहिए। विरासत के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। योगी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार में हर एक को सुरक्षा की गारंटी मिली है। शासन की योजनाएं बिना भेदभाव के सबको उपलब्ध कराई जा रही है। हम बिना तुष्टीकरण किए विकास की परियोजनाओं को आगे बढ़ा रहे हैं। हमारी सरकार में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं किया जा रहा है।

'पीएम मोदी के नेतृत्व में विरासत का सम्मान हो रहा': सीएम योगी ने कहा कि जो पहले सपना हुआ करता था, आज वह हकीकत बन गया है। उसी हकीकत को आगे बढ़ाने के लिए आज हम लोग यहां पर आए हैं। आज यहां कई परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया गया। इनमें सड़क, पंचायती राज, ग्राम सचिवालय के निर्माण, हर घर नल सहित कई परियोजनाएं शामिल हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विरासत का सम्मान हो रहा है। इस कड़ी में काशी विश्वनाथ धाम बनकर तैयार हो गया है। उत्तराखंड में केदारनाथ धाम, मध्य प्रदेश में महाकाल लोक और अयोध्या में प्रभु श्री राम के भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। जनवरी 2024 में प्रभु श्री राम अपने मंदिर में विराजमान हो जाएंगे। यह हर भारतवासी के लिए गौरव का क्षण होगा। अयोध्या के विकास का सबसे ज्यादा लाभ अंबेडकरनगर को मिलेगा।

'मोदी-योगी के नेतृत्व में भारत बने विश्व गुरु'

अंबेडकरनगर। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने मंगलवार को यहां कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश समृद्धि के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहा है। हम सबकी यही इच्छा है कि इन दोनों का नेतृत्व यशस्वी बने और इन दोनों के ही नेतृत्व में भारत विश्व गुरु बने। केंद्रीय मंत्री तोमर 1,212 करोड़ रुपये लागत वाली 2,339 विकास परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। तोमर ने प्रधानमंत्री मोदी के नौ साल को बेमिसाल करार देते हुए कहा उस वक्त छाती गर्व से चौड़ी हो जाती है जब दूसरे देश का मंत्री भारत की धरती पर आकर यह कहता है कि ऊपर वाला हम सबकी सुने। मोदी जैसा प्रधानमंत्री दुनिया के हर देश को मिले। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव को देशभर में अच्छे से संपन्न किया है। प्रधानमंत्री ने उस समय कहा था कि आजादी का महोत्सव समारोह का अवसर नहीं है। यह आजादी का महोत्सव संकल्प को पूरा करने का अवसर है। हम सब लोगों को नए भारत के लिए संकल्प लेना है। जो संकल्प आज लेंगे, वह 25 वर्षों में संकल्प सिद्ध होगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आजादी का शताब्दी वर्ष जब हम लोग मना रहे होंगे तो भारत का दुनिया के सामने एक अलग ही स्वरूप होगा। आज देश का नेतृत्व प्रधानमंत्री मोदी कर रहे हैं और देश के सबसे बड़े राज्य का नेतृत्व मुख्यमंत्री योगी कर रहे हैं। हम सबकी चाहत है कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में भारत समृद्ध हो। दोनों का नेतृत्व यशस्वी बने और इनके नेतृत्व में भारत विश्व गुरु बने। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी के अलावा जिले के नेता एवं अधिकारी मौजूद रहे।

ट्रैक्टर रैली को दिखाई हरी झंडी: इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर और मुख्यमंत्री योगी ने छह माह से ऊपर के बच्चों को अन्नप्राशन कराया। साथ ही एमएसएमई और समाज कल्याण विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का शुभारंभ किया।

इसके अलावा दोनों नेताओं ने सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर मैकेनाइजेशन योजना के तहत कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना हेतु चार लाख रुपये का अनुदान और ट्रैक्टर रैली को हरी झंडी दिखाई।

बिपरजॉय तूफान के प्रभावितों से मिले सीएम अशोक गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मंगलवार को बाड़मेर जिले में बिपरजॉय चक्रवात से प्रभावित क्षेत्रों का हवाई सर्वे किया। उन्होंने चैहटन, धनाऊ और आसपास के क्षेत्रों में सर्वे करने के बाद प्रभावितों से मुलाकात भी की। गहलोत ने प्रभावितों से संवाद करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा बिपरजॉय को गंभीरता से लेकर पूर्व में ही तैयारियां कर ली गई थीं। हालांकि कच्चे मकानों, पशुओं और विद्यालय भवनों को नुकसान हुआ है। मौसम विभाग के अधिकारियों के साथ लगातार समन्वय रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रभावित क्षेत्रों में सर्वेक्षण कराकर नियमानुसार मुआवजा दिया जाएगा। इसके लिए अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि 15 हजार से अधिक लोगों को बिपरजॉय आने से पूर्व ही शिफ्ट किया गया था। साथ ही लगभग 2 हजार लोगों को बचाव टीमों द्वारा रेस्क्यू कर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

सीमा पर सामान्य स्थिति और शांति बहाल हो: मोदी

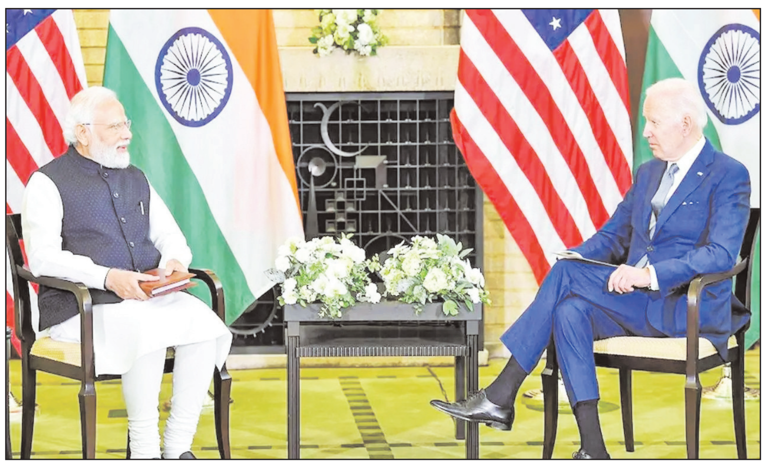

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी अमेरिकी यात्रा से पूर्व वहां के प्रमुख समाचार पत्र वॉल स्ट्रीट जर्नल को दिए साक्षात्कार में भारत को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता दिए जाने की वकालत की है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की वर्तमान स्थिति की समीक्षा होनी चाहिए। दुनिया से यह पूछा जाना चाहिए क्या वह भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बनते देखना चाहती है। उन्होंने कहा- "मैं स्पष्ट कर दूं कि हम भारत को किसी देश की जगह लेने के रूप में नहीं देखते हैं। हम इस प्रक्रिया को भारत द्वारा विश्व में अपना उचित स्थान प्राप्त करने के रूप में देखते हैं।" प्रधानमंत्री ने अमेरिका के साथ संबंधों पर कहा कि दोनों देशों के बीच संबंध पहले से कहीं अधिक मजबूत और गहरे हैं । दोनों देशों के नेताओं के बीच अभूतपूर्व विश्वास है। साक्षात्कार में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि दुनिया के सभी देशों को अंतरराष्ट्रीय नियमों और एक-दूसरे की संप्रभुता का सम्मान करना चाहिए। आपसी झगड़ों का समाधान कूटनीति और बातचीत से किया जाए। उन्होंने कहा है कि चीन के साथ सामान्य संबंध के लिए जरूरी है कि सीमा पर सामान्य स्थिति और शांति बहाल होनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत का दृढ़ विश्वास है कि दूसरे देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान होना चाहिए। साथ ही नियमों पर आधारित व्यवस्था के तहत शांतिपूर्ण ढंग से आपसी मुद्दों और विवादों का समाधान होना चाहिए।

पैसे-पैसे को मोहताज पाक बेचेगा कराची बंदरगाह

इस्लामाबाद। पाकिस्तान जबर्दस्त आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है। पैसे-पैसे को मोहताज पाकिस्तान ने अब कराची बंदरगाह बेचकर आर्थिक स्थिति सुधारने की तैयारी की है। अब कराची बंदरगाह संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को सौंपने की तैयारी की जा रही है। पाकिस्तान को आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण की दरकार है। इस ऋण को पाने के लिए पाकिस्तान को पुराना बकाया चुकता करना पड़ेगा। इसके लिए पाकिस्तान को आपातकालीन फंड हासिल करने की जरूरत है। इसी फंड के लिए पाकिस्तान ने कराची बंदरगाह संयुक्त अरब अमीरात को देने का फैसला किया है। पाकिस्तान सरकार ने यूएई की सरकार से इस बावत बातचीत भी शुरू कर दी है। दरअसल, पाकिस्तान सरकार को अब कहीं से ऋण नहीं मिल रहा है, इसी वजह से वह अब तेजी से अपनी संपत्तियां बेच रही है। पाकिस्तान को डर है कि यदि समय पर पैसा नहीं मिला, तो वह श्रीलंका की तरह डिफॉल्टर हो जाएगा। इससे पहले यूएई ने साफ कर दिया है कि वह अब पाकिस्तान को तब तक कोई लोन नहीं देगा।

योगी सरकार की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही सराहना

बंगाल पंचायत चुनाव: होगी केंद्रीय बलों की तैनाती

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव के दौरान केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती के कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली राज्य सरकार और राज्य चुनाव आयोग की याचिका खारिज कर दी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाई कोर्ट के आदेश में दखल देने की कोई वजह नहीं है। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि चुनाव कराना हिंसा का लाइसेंस नहीं हो सकता। राज्य में हिंसा का इतिहास और मौजूदा हालात के मद्देनजर ही हाईकोर्ट ने केंद्रीय बलों की नियुक्ति का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल सरकार से कहा कि चाहे 2013 हो या 2018 पश्चिम बंगाल में चुनाव के दौरान हिंसा का इतिहास रहा है। चुनाव कराने की आड़ में हिंसा की इजाजत नहीं दी जा सकती। लोग नामांकन पत्र ही दाखिल न कर पा रहे हैं, उनकी हत्या हो रही है। कलकत्ता हाई कोर्ट ने हिंसा की ऐसी घटनाओं के मद्देनजर ही ऐसा आदेश पास किया होगा। सुप्रीम कोर्ट ने राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से पेश वकील मीनाक्षी अरोड़ा से पूछा कि आपका काम है स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित कराना। दूसरे राज्यों से भी पुलिस फोर्स मंगवाई गई है। ऐसे में आपको इस आदेश से क्या दिक्कत है। अतिरिक्त बल दूसरे राज्यों की हो या केंद्र सरकार की, इसकी आपको चिंता क्यों है। तब राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से पेश वकील ने कहा कि हाई कोर्ट का आदेश कहता है कि केंद्रीय बलों की मांग आयोग भेजे, ये काम आयोग का नहीं है। तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि चुनाव कराना हिंसा का लाइसेंस नहीं हो सकता है। राज्य में हिंसा का जो इतिहास रहा है, जो मौजूदा हालात हैं, उसके मद्देनजर ही हाईकोर्ट ने केंद्रीय बलों की नियुक्ति का आदेश दिया है। पश्चिम बंगाल राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से वकील मीनाक्षी अरोड़ा ने सुप्रीम कोर्ट से कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगाने की मांग की।

मणिपुर हिंसा: जल्द सुनवाई करने से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर हिंसा मामले पर जल्द सुनवाई करने से इनकार कर दिया है। सूबे में हिंसा की ताजा घटनाओं के मद्देनजर वरिष्ठ वकील कॉलिन गोंजाल्वेस ने जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली अवकाशकालीन बेंच से जल्द सुनवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के आश्वासन के बावजूद 70 आदिवासियों की हत्या हो चुकी है। उनको सेना की सुरक्षा की जरूरत है। कोर्ट ही आखिरी उम्मीद है।

सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि जमीन पर हालात नियंत्रित करने के लिए सुरक्षा एजेसियां लगी हैं। तब कोर्ट ने कहा कि ये कानून व्यवस्था से जुड़ा गम्भीर मसला है, पर सेना बुलाने जैसा कदम उठाने के लिए सरकार को कोर्ट के दखल की जरूरत नहीं है। हम गर्मी की छुट्टियों के बाद तीन जुलाई को ही सुनवाई करेंगे। मणिपुर ट्राईबल फोरम ने दायर याचिका में कहा है कि केंद्र सरकार ने कोर्ट में जो आश्वासन दिया था वो झूठा था। याचिका में कहा गया है कि केंद्र सरकार मणिपुर के मामले पर गंभीर नहीं है। मणिपुर हिंसा को लेकर सुप्रीम कोर्ट में 17 मई को जो पिछली सुनवाई हुई थी उसके बाद से कुकी समुदाय के 81 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है औ? 31,410 कुकी विस्थापित हो चुके हैं। इस हिंसा में 237 चर्चों और 73 प्रशासनिक आवासों को जला किया गया है। इसके अलावा करीब 141 गांवों को नष्ट कर दिया गया है। केंद्र सरकार और मणिपुर राज्य सरकार ने 17 मई को सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि हिंसा काबू में आ चुकी है। हाई कोर्ट ने मैतई समुदाय को जनजाति (एसटी) का दर्जा देने का जो आदेश दिया था, उसके लिए भी राज्य सरकार को हाई कोर्ट ने एक साल का समय दे दिया था। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने आगाह किया था कि सरकार से जुड़े लोग किसी समुदाय के खिलाफ बयान न दें।

'लोकसभा चुनाव में विपक्ष एकत्रित होकर भाजपा को हराएगा'

औरैया। जनपद के यमुना रोड पर स्थित इटावा सहकारी बैंक के जीर्णोद्धार के बाद मंगलवार को शुभारंभ करने आए इटावा जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष आदित्य यादव एवं मुख्य अतिथि शिवपाल यादव पहुंचे। उन्होंने फीता काटकर सहकारी बैंक का शुभारंभ किया। इसके उपरांत उन्होंने वार्ता की। वार्ता में सपा के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल यादव ने कहा कि विपक्ष एकत्रित होकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को आने वाले लोकसभा चुनाव में हराने का काम करेगा।

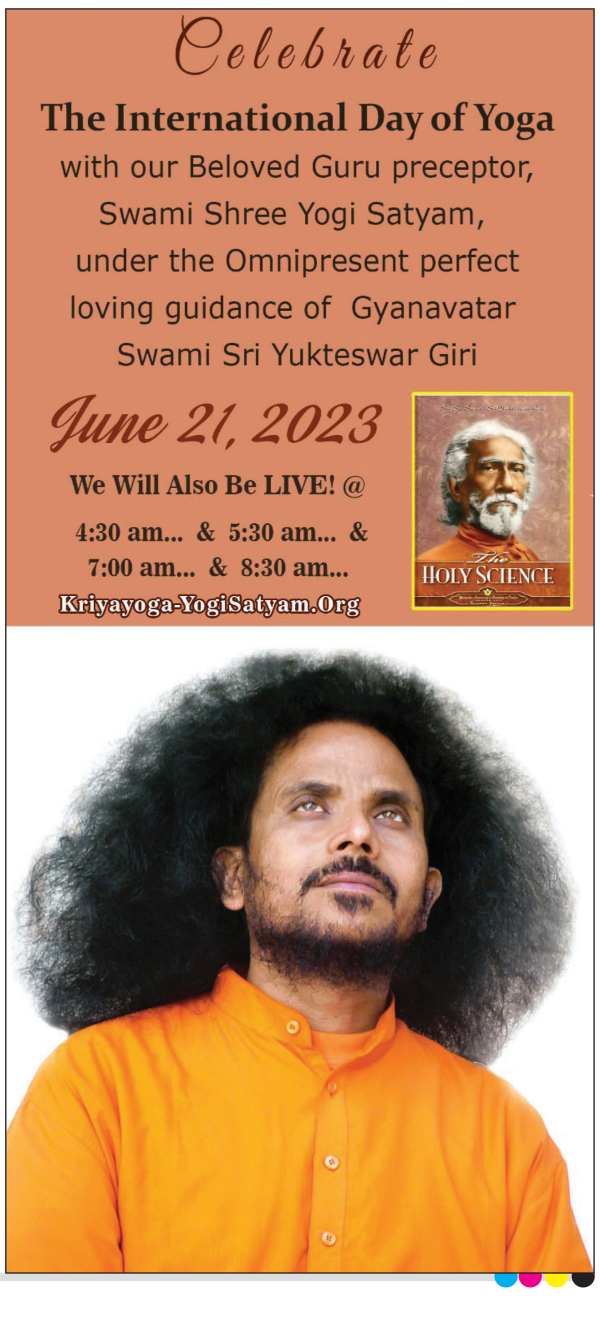

Celebrate

The International Day of Yoga

with our Beloved Guru preceptor,
Swami Shree Yogi Satyam,
under the Omnipresent perfect
loving guidance of Gyanavatar
Swami Sri Yukteswar Giri

June 21, 2023

We Will Also Be LIVE! @
4:30 am... & 5:30 am... &
7:00 am... & 8:30 am...
Kriyayoga-YogiSatyam.Org

खबर संक्षेप

अज्ञात युवक का मिला शव नही हुआ शिनाख्त, पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया

मऊआइमा। मंगलवार को सुबह चालिस वर्षीय एक अज्ञात युवक का शव दुगार्गंज और घीनपुर शारदा सहायक नहर के निकट मलखानपुर पीपल के पेड के पास देख ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी पुलिस ने शिनाख्त कराने को कोशिश की शिनाख्त न हो पाई शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम मलखानपुर से पांच सौ मीटर दूरी पर स्थित दुगार्गंज घीनपुर स्थित शारदा सहायक नहर के निकट पीपल के पेड के पास एक चालिस वर्षीय अज्ञात युवक का शव मंगलवार को सुब ग्रामीणों ने देख कर इसकी सूचना पुलिस को दी सूचना पर पहुची पुलिस ने शव की तमाम लोगों से शिनाख्त कराने की कोशिश की परन्तु उसकी शिनाख्त नहीं हो सकी। पुलिस के अनुसार उसकी उम्र लगभग चालिस वर्ष है। ग्रामीणों ने बताया कि वह विज्ञप्ति है। यह इधर उधर घूमता रहता था। फिलहाल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

देर रात मालगाड़ी की एक बोगी रेलवे ट्रैक से उतरी नीचे

लगभग 3 किलोमीटर तक रेलवे ट्रैक के बगैर ही मालगाड़ी की बोगी चलती रही

अखंड भारत संदेश

जसरा। जसरा रेलवे स्टेशन निकलने से महज महज 1 किलोमीटर की दूरी से ही जहां देर रात मालगाड़ी की एक बोगी रेलवे ट्रैक से नीचे उतर गई और लगभग 3 किलोमीटर तक रेलवे ट्रैक के बगैर ही मालगाड़ी की बोगी चलती रही` लोको पायलट को शायद मदरहा रेलवे स्टेशन के पास पहुंचने पर इस बात की जानकारी हुई तो वह मदरहा रेलवे स्टेशन पर ही अप लाइन पर गाड़ी खड़ी कर दी और संबंधित विभाग के अधिकारियों को सूचना दी। वहीं मदरहा रेलवे स्टेशन पर मौजूद कुछ विभागीय कर्मचारियों के द्वारा बताया गया कि मालगाड़ी का डिब्बा रात लगभग 2:00 से 3:00 के बीच अप लाइन पर गुजरने के दौरान रेलवे ट्रैक से नीचे उतरा और फिर वह काफी दूर तक चलता रहा जिससे रेलवे ट्रैक भी क्षतिग्रस्त हो गया। जब कि रेलवे ट्रैक के मरम्मत कार्य में रेलवे विभाग के कर्मचारी लगे हुए हैं ,वहीं अपलाइन से गुजरने वाली ट्रेनों को मदरहा रेलवे स्टेशन पर लूप लाइन से निकाला जा रहा है। जब कि अप लाइन पर अभी भी माल गाड़ी सभी डिब्बों के साथ लगभग 15 घंटे से भी ज्यादा समय से खड़ी है। जसरा व मदरहा रेलवे स्टेशन से गुजरने वाली ट्रेन ठहराव के उपरांत ही धीरे-धीरे आगे गंतव्य की ओर बढ़ रही हैं। अगर देखा जाए तो विभागीय अधिकारी मालगाड़ी के रेलवे ट्रैक से उतरे हुए डिब्बे के बारे में कोई जानकारी नहीं देना चाह रहे हैं। रेलवे की लापरवाही से एक बार फिर से बड़ी दुर्घटना होने से बाल बाल बच गया। सांय से ट्रेनों का आवागमन चालू कर दिया गया है।

जनसभा को सफल बनाने हेतु की गई अपील

सहसों। भाजपा कार्यकर्ताओं की एक बैठक छत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज सहसों में भाजपा गंगापार जिला उपाध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल की अध्यक्षता में हुई। जिसमें प्रधानमंत्री के नौ वर्ष पूर्ण होने पर 22 जून दिन गुरुवार को सोरांव के सधनगंज की बाग में आयोजित विशाल जनसभा होगी। जिसके मुख्य अतिथि भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहनवाज हुसैन एवं उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के विचारों को सुनने तथा विशाल जनसभा में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर सफल बनाने की अपील की गई। इस अवसर पर पुष्कर सिंह पटेल, संदीप द्विवेदी, राघवेन्द्र सिंह सिंगरौर, शिव नारायण सिंह गप्पू आदि उपस्थित रहे।

राहुल गांधी की यौमे पैदाइश का मनाया जश्न

प्रयागराज। शहर अल्पसंख्यक कांग्रेस कमेटी के सदस्यों ने पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का 53वां जन्मदिन नफरत को मोहब्बत में बदलने के संकल्प के रूप में मनाया। प्रातः अटाला चौराहा पर शहर अध्यक्ष अरशद अली के नेतृत्व में पार्टीजनों ने केक काटा और मिठाईयाँ बांटी। इस मौके पर पीसीसी सदस्य फुजेल हाशमी शहर अध्यक्ष अरशद अली, पीसीसी सदस्य फुजेल हाशमी, परवेज सिद्दीकी मो हसीन महफूज अहमद, तबरेज अहमद, जाहिद नेता, गुलाम वारिस, मुख्तार अहमद, मो अकमल, मुस्तकी कुरेशी, आदि मौजूद थे।

पीने का पानी नहीं मिलने से परेशान शंकरगढ़वासी आज करेंगे घेराव

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। जल संकट से जूझ रहे कस्बावासियों का धैर्य टूट गया है। तमाम जतन करने के बाद भी कोई रास्ता नहीं सूझने पर कस्बावासियों ने अब जल निगम के कार्यालय के घेराव की चेतावनी दी है। कस्बावासियों का कहना है कि पिछले एक पखवारे से पेयजल के लिए भी लोग तरस रहे हैं। कभी पानी की केन खरीदनी पड़ रही है तो कभी केन के नहीं मिलने पर एक लीटर की बोतल से काम चलाना पड़ रहा है। यूपी-एमपी की सीमा पर स्थित नगर पंचायत शंकरगढ़ पहाड़ी एरिया में स्थित है। यहा का जलस्तर सामान्य दिनों में भी काफी नीचे रहता है, जबकि मई और जून के माह में यहां का जलस्तर पाताल में पहुंच जाता है। नतीजा यह होता है कि लोगों को निजी व्यवस्था से पानी नहीं मिल पाता। दशकों पुरानी यहां की पेयजल समस्या को देखते हुए सरकारों ने करोड़ों रुपये पानी की तरह फूंक दिए, लेकिन अभी तक समस्या का ठोस इंतजाम नहीं होसका। लगभग 35 हजार की आबादी वाले नगर पंचायत शंकरगढ़ में मौजूदा समय में पिछले एक पखवारे से जलसंकट इतना गहरा गया है कि लोगों को टैंकर का सहारा लेना पड़ रहा है। नगर पंचायत प्रशासन की तरफ से आधा दर्जन टैंकर लगाए गए हैं, लेकिन दर्जनभर वार्ड की लगभग 35 हजार की आबादी के लिए यह टैंकर भी नाकाफी साबित हो रहे हैं। समस्या से परेशान व्यापार मंडल शंकरगढ़ के महामंत्री रतन केसरवानी ने नगर के समस्त व्यापारियों और क्षेत्र वासियों से अपील की है कि क्षेत्र में भीषण पेयजल संकट को देखते हुए बुधवार सुबह 10:00 बजे जल निगम शंकरगढ़ प्रांगण में शांति व्यवस्था के साथ धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। रतन केसरवानी ने कहा कि इसमें सभी लोगों की सहभागिता जरूरी है। उन्होंने सभी लोगों से कल सुबह श्रीराम वाटिका पुरानी बाजार में एकत्र होने की अपील की है, ताकि राम वाटिका से एक साथ निकलकर जल निगम पहुंचा जा सके।

बाल्मीकि आश्रम समेत पंचक्रोशी परिधि के पौराणिक स्थल होंगे गुलजार: डॉ.पाण्डेय

अखंड भारत संदेश

मिशन का प्रयास लाया रंग, संगोष्ठी में हुई मुख्यमंत्री की सराहना

करछना। जमुनापार के करछना में गंगा- तमसा तट लकटहा-पनासा स्थित महर्षि बाल्मीकि रचना प्रेरणा स्थली के पर्यटन विकास हेतु करोड़ों रुपए आवंटित होने के साथ-साथ पंचक्रोशी परिधि में स्थित मनु तपस्थली मनैया,ऋषि पर्णास आश्रम पनासा, समेत स्थानीय पौराणिक मन्दिरों के लिए भी पर्याप्त धन मुहैया हो चुका है। शासन द्वारा प्रदत्त धन से अब शीघ्र ही अपने पौराणिक स्थल पर्यटन विकास से जुड़कर गुलजार होंगे।यह बातें रामपुर में मंगलवार को आयोजित मिशन की संगोष्ठी के दौरान संयोजक डॉ.भगवत पाण्डेय ने कही। उन्होंने कहा कि जागृति मिशन के अथक प्रयासों के चलते विगत दो दशक पूर्व ही राष्ट्रपति पदक प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय विद्वानद्वय,प्रयाग विश्व विद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो.चण्डिका प्रसाद शुक्ल एवं रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो.रहस बिहारी द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत तथ्यपरक शोधलेखों के अनुरूप तत्कालीन सांसद डॉ.मुरली मनोहर जोशी द्वारा सार्थक पहल के चलते बाल्मीकि आश्रम की स्थापना हुई। जिससे पूरा प्रयाग और जमुनापार गौरवान्वित हुआ। अब शीघ्र ही करोड़ों रुपए से आश्रम का सम्पूर्ण विकास होगा।उधर पंचक्रोशी परिक्रमा की परिधि में आने वाले पौराणिक मन्दिर भी पर्याप्त धन की उपलब्धता से विकसित होंगे साथ ही पर्यटन विकास और स्थानीय रोजगार को भी गति मिलेगी। मिशन के लोगों ने इस सराहनीय कार्य हेतु प्रदेश के मुख्यमंत्री की सराहना करते हुए बधाई दी। संगोष्ठी की अध्यक्षता महाकवि त्रिफला जी और संचालन रजत मिश्रा ने किया।इस मौके पर मानिकचंद ओझा, राजेंद्र शुक्ला, वीरेंद्र कुसुमाकर, मनीष तिवारी, कमला शंकर त्रिपाठी, सुनील प्रजापति, विजय पाल, राजमणि चौधरी, अशोक सिंह, अशोक विश्वकर्मा, अतुल तिवारी समेत कई समाज सेवी एवं मिशन के लोग मौजूद रहे।

पुरानी रंजिश को लेकर चले लाठी डंडा तमंचा तीन घायल 8 लोगों पर मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के धरौता गांव में पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्ष आपने सामने हो गए और जम कर चले लाठी डंडा तमंचा लेकर पड़ोसी हमला बोल दिए तथा तमंचा से हवाई फायरिंग भी की गई। जिस में तीन घायल हो गए घायलों को पुलिस ने अस्पताल भेज कर आठ के खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा के धरौता गांव निवासी राम कुमार पुत्र रामभरोस के मुताबिक पुरानी रंजिश को लेकर विपक्षी लाठी डंडा सरिया तमंचा से हवाई फायर करते हुए हमला बोल दिए। जिससे परिवार की मनराजी देवी ,धर्मेंद्र कुमार, गीता देवी को चोटें आयी है। पुलिस ने घायलों को अस्पताल भेज कर राम कुमार की तहरीर पर संतोष कुमार,रमाशंकर, रविशंकर,वीनोद कुमार, सुरेश कुमार, रामफेर, शिवमूर्ति, खुशबू के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

ट्रैक्टर पलटने से 20 वर्षीय युवक की मौत, कोहराम

बेकाबू होकर पोल से भिड़ी अनियंत्रित मोटरसाइकिल, युवक घायल

अखंड भारत संदेश

लालापुर। थाना क्षेत्र के ओडगी तरहार निवासी दीपक भारतीया मंगलवार दोपहर गोल्हैया पहाड़ (एनएमडीसी) से ट्रैक्टर से लौट रहा था कि अचानक ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया और दीपक को गंभीर चोट आई, जिसे इलाज के लिए निजी वाहन से अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान दीपक की मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया कि दीपक दो भाई थे, लगभग 4-5 वर्ष पहले एक भाई की मौत करेंट की चपेट में आने से हो गई थी.... ।दीपक की मौत से पूरा परिवार सदमे में है ।खबर लिखे जाने तक घटना की सूचना लालापुर पुलिस को नहीं मिली ।वहीं लालापुर थाना क्षेत्र के सोनवै मंदिर के पास एक अनियंत्रित मोटर साइकिल बिजली के पोल से जा भिड़ी, जिसमे मोटरसाइकिल सवार को चोटें आई, मोटरसाइकिल सवार युवक उमापुर के थे।

दोस्त के साथ स्नान करने गया युवक नदी में डूबा, मौत

मेजा। मेजा क्षेत्र के ममोली गांव में दोस्त के घर आया युवक टोंस नदी में स्नान के दौरान पानी में डूब गया। जिससे आनन-फानन में स्थानीय मछुआरों की मदद से उसे तत्काल नदी से निकाला गया और अस्पताल भेजा गया। जहां युवक की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार प्रयागराज शहर के मधवापुर बैरहना कीड़गंज निवासी इशु सोनकर (19) पुत्र राजन सोनकर अपने दोस्त मेजा थाना क्षेत्र के ममोली गांव निवासी अरुण पाण्डेय के यहां आया था। दोनों गांव के और दोस्तों के साथ पास स्थित टोंस नदी में स्नान करने गए थे। स्नान के दौरान दो युवक डूबने लगे। जिसे दोस्तों के शोरगुल मचाने पर स्थानीय मछुआरों ने एक को बचा लिया। इशु सोनकर गहरे पानी में डूब गया। थोड़ी देर बाद स्थानीय लोगों की मदद से इशु को बाहर निकाला गया। आनन-फानन में उसे एसआरएन अस्पताल भिजवाया गया। जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना से युवक के परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

न्यूज झरोखा

बिजलेंश के साथ विजली विभाग ने मारा छापा 18 पर बिजली चोरी की हुई एफआईआर

झूंसी। बिजली विभाग विजलेंश टीम के साथ मंगलवार को भोर में ही छाप मार कर 18 लोगो को बिजली चोरी करते पकड़ा। सभी पर एफआईआर दर्ज कराई गई है। छापेमारी से ग्रामीणों में हड़कंप मचा रहा। पड़ रही भीषण गर्मी में जहा लोग बिजली कटौती से परेशान है वही लगातार विद्युत विभाग की छापेमारी से बिजली चोरी करने वालो में खलबली मची है। विधुत विभाग की टीम विजिलेंस के साथ ग्राम मजिलेपुर अंदावा और दुर्जनपुर में भोर में रेड मारा तो लोगो मे हड़कंप मच गया। कई लोग छतों से केबल काटने लगे। चेकिंग में 18 लोग मीटर से केबल बाईपास कर बिजली चोरी करते पाए गए। जिनके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई। चेकिंग के दौरान अधिशासी अभियंता मनोज कुमार यादव, उपखंड अधिकारी पवन कुमार सिंह, विजिलेंस इंस्पेक्टर प्रभारी और अवर अभियंता भानु प्रताप यादव, इंद्रसेन यादव, रविंद्र मोहन कश्यप, विजिलेंस अवर अभियंता अखिलेश कुमार मौजूद रहे।

ई-रिक्शा चालक को गोली मारने वाले मुख्य आरोपी गिरफ्तार

प्रयागराज। राजापुर में ई-रिक्शा चालक को गोली मारने वाले मुख्य आरोपी राशिद को कैंट पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके पास से हत्या में इस्तेमाल तमंचा भी बरामद कर लिया है। पूछताछ में राशिद ने बताया कि ई-रिक्शा चालक आबिद से उसका विवाद हो गया था। उसकी एक रिश्तेदार के खिलाफ उसने आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। छेड़खानी का विरोध करने पर झड़प हुई और उसने आबिद को गोली मार दी थी। वारदात के बाद से वह फरार था। राजापुर निवासी आबिद की तीन जून की रात में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उसके पिता गुड़डू ने राशिद, पंकज और सनी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। गुड्डू का कहना था कि समैक और रंगदारी के विवाद में उसके बेटे की हत्या की गई है। पुलिस पंकज और सनी को जेल भेज चुकी है।

ससुराल गए युवक की कुंए में मिली लाश

प्रयागराज। ससुराल गए एक युवक की कुएं में गिरने से मौत हो गई। मंगलवार शाम उसका शव पड़ोस की महिला ने देखा तो उसके ससुराल वालों को बताया। ससुराल वालों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और फायर ब्रिगेड की मदद से शव को बाहर निकलवाया। लाश को पोस्टमार्टम भेज दिया गया है। पुलिस अभी यह स्पष्ट नहीं कर पाई है कि यह सुसाइड है या हादसा।गंगानगर के सोरांव थाना क्षेत्र के देवलपुर गांव निवासी महेंद्र कुमार (35) सोमवार को अपनी ससुराल बारी गांव थाना फाफामऊ गया था। रात में वह ससुराल में रुक गया। सुबह वह गायब था। ससुराल वालों ने खोजबीन की लेकिन कुछ पता नहीं चला। शाम को पड़ोस की एक महिला बगल में कुछ दूरी पर स्थित एक सूखे कुएं में कूड़ा डालने गई थी। उसमें लाश पड़ी देख महिला ने उसके ससुराल वालों को बताया।गांव के लोग इकट्ठा हुए। पुलिस और फायर ब्रिगेड को बुलाया गया। सभी ने मिलकर बॉडी को बाहर निकाला। इसके बाद पुलिस ने लिखा पढ़ी करके पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया। थानाध्यक्ष फाफामऊ आशीष सिंह का कहना है कि प्रथम दृष्टया तो हादसा लग रहा है। क्योंकि कुएं में जहरीली गैस थी। इसलिए उसकी मौत हो गई। बाकी जांच के बाद चीजें स्पष्ट होंगी। अभी कोई तहरीर नहीं आई है।

खून से लथपथ युवक थाने चौकी का लगाता रहा चक्कर

झूंसी। दबंगों ने जमीनी विवाद में नई झूंसी के रहने वाले एक युवक को पीटकर लहूलुहान कर दिया घायल अवस्था में युवक खून से लथपथ कार्यवाही के लिए झूंसी चौकी व थाने का चक्कर लगाता रहा पर उसकी किसी ने नहीं सुनी। नई झूंसी निवासी वकील अहमद ने बताया कि क्षेत्र के कुछ युवक उसकी जमीन पर जबरन कब्जा करना चाहते हैं जिसकी नियत से सोमवार की रात उसके घर पर आए और उसे लाठी-डंडे से जमकर पीटा उसके सर, हाथ, पैर में गंभीर चोटें आई पीड़ित मामले की शिकायत लेकर थाने पहुंचा जहां से उसे झूंसी चौकी भेज दिया गया। चौकी इंचार्ज चौकी पर नही मिले पर फोन पर पीड़ित को आश्वासन देते रहे। घटना के 24 घंटे बाद भी ना तो पुलिस ने उसका मेडिकल कराया न ही रिपोर्ट दर्ज की।

गंगा में डूबा युवक जंजीरों से जकड़ा जिंदा मिला

सीमा विवाद में उलझी रही सरायइनायत व हंडिया पुलिस

हनुमानगंज। लीलापुर घाट पर सोमवार की दोपहर दोस्त के साथ गंगा नहाने गया युवक मंगलवार को जंजीरों में जकड़ा हुआ जिंदा मिला। अमरजीत के मिलने से बिलखते परिजनों ने जहां राहत की सांस ली वहीं मामले में आए नए मोड़ से रहस्य भी गहरा गया है। मामले की सूचना पुलिस कंट्रोल रूम को दी गई तो सरायइनायत व हंडिया पुलिस सीमा विवाद को लेकर उलझी रही बाद में सरायइनायत पुलिस मौके पर पहुंची और युवक से पूछताछ कर रही है। हंडिया के ढोकरी गांव निवासी अमरजीत पटेल गांव के ही अपने दोस्त अशोक पटेल के साथ सोमवार को बाइक से गंगा नहाने लीलापुर घाट पर गया था गंगा नहाने के बाद वह वापस लौट रहा था अचानक उसे गंगाजल लेने की याद आई गंगाजल लेने गया उसके बाद अमरजीत गायब हो गया काफी इंतजार के बाद जब वह नहीं आया तो उसका दोस्त अशोक उसे खोजने पहुंचा देखा कि घाट पर चप्पल और मोटरसाइकिल की चाबी पड़ी हुई है पर अमरजीत का कहीं अता-पता नहीं है मामले की सूचना उसके परिजनों के साथ-साथ पुलिस को भी दी गई मौके पर पहुंचे परिजन ग्रामीणों की मदद से अमरजीत की तलाश पानी में करने लगे जहां उसका गमछा मिला जिससे यह लगा कि अमरजीत गंगा में डूब गया देर शाम तक पुलिस ने भी गोताखोरों के साथ सर्च ऑपरेशन चलाया पर अमरजीत का कहीं कुछ पता नहीं चला। मामले में तब नया मोड़ आ गया जब अमरजीत मंगलवार को जंजीरों से जकड़ा हुआ मिला। अमरजीत ने बताया कि वह पानी लेने गया था तभी कुछ लोग आए और उससे पानी पिलाने की बात बोले वह पानी पिला रहा था तभी उसे कुछ सुंघा कर बेहोश कर दिया गया उसके बाद वह जंजीरों में जकड़ा हुआ मिला जंजीर एकदम नई थी उस पर कई ताले भी बड़े-बड़े लगे हुए थे। पुलिस के साथ-साथ लोगों के लिए भी यह रहस्य बना हुआ है कि अमरजीत को आखिर किसने जंजीरों में जकड़ा।

पत्नी को तीन तलाक दिया फिर पत्नी की जेठानी की पुत्री को लेकर हुआ फरार

मऊआइमा। अतिरिक्त दहेज न मिलने पर पति नाराज हो कर पत्नी की जेठानी की पुत्री को लेकर फरार हो गया और पत्नी को फोन से तीन तलाक कह दिया। पत्नी ने थाने में तहरीर दे कर पति सहित चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मालूम हो कि प्रतापगढ़ के दिलीप पुर गोपालपुर निवासी मकबूल अहमद ने अपनी पुत्री नौरीन बानों की शादी 200 0 में मऊआइमा के ग्राम महमदपुर सराय अली निवासी इमरान खान के साथ किया था। आरोप है कि शादी के बाद से दहेज कम मिलने का ताना ससुराली देते रहे और मारते पीटते रहे।

नौरीन बानों का आरोप है कि उसका पति इमरान खान उसकी जेठानी की लडकी को लेकर भाग गया तथा फोन से उसे तीन तलाक दे दिया। नौरीन बानों ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर पति इमरान खान, जेठानी रेशमा ,जेठ मुनव्वर ,जेठ मुस्ताक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

धरमपुर प्रधान ने ग्राम सचिवालय तक सांसद से सड़क व विद्युतीकरण की उठाई मांग

अखंड भारत संदेश

मेजा। योगी सरकार के मंशानुरूप धरमपुर ग्राम पंचायत में एक आकर्षक ग्राम सचिवालय का निर्माण ग्राम प्रधान रेखा देवी द्वारा कराया गया, जिसमें सभी प्रकार की सुविधाओं से परिपूर्ण है। जन इच्छा का सम्मान करते हुए प्रधान प्रतिनिधि विनोद कुमार मिश्र ने क्षेत्रीय सांसद से मिलकर ग्राम सचिवालय का लोकार्पण करने का अनुरोध किया था। गत 12 दिसंबर को प्रयागराज की सांसद डा० रीता बहुगुणा जोशी ने धरमपुर ग्राम सचिवालय का लोकार्पण किया जिसके भव्य आयोजन की क्षेत्र में काफी दिनों तक चर्चा बनी रही। कार्यक्रम में क्षेत्र की नामचीन हस्तियों ने शिरकत की थी। जनता की माँग पर प्रधान द्वारा सांसद रीता बहुगुणा जोशी जी के समक्ष ग्राम सचिवालय तक आवागमन हेतु चकमार्ग के पक्कीकरण के लिये इण्टरलाकिंग रोड और विद्युतीकरण के लिये ट्रांसफार्मर की माँग रखी थी। सांसद ने भी प्रधान रेखा देवी की जमकर तारीफ करते हुये सर्वोच्च प्राथमिकता पर उक्त दोनों कार्य कराने का भरोसा जताया था। लेकिन अभी तक उक्त दोनों कार्य प्रारम्भ नहीं हो पायें है। इस बारे में धरमपुर प्रधान प्रतिनिधि विनोद कुमार मिश्र ने बताया कि ₹ग्राम सचिवालय धरमपुर तक आवागमन हेतु जो चकमार्ग उपलब्ध है, उस पर ग्राम पंचायत द्वारा मनरेगा निधि से कच्चे सम्पर्क मार्ग का निर्माण कार्य पूर्ण करा दिया गया है। जनहित में सांसद डा० रीता बहुगुणा जोशी से ग्राम सचिवालय धरमपुर तक 200मीटर इण्टरलाकिंग रोड बनवाने तथा विद्युतीकरण हेतु एक ट्रांसफार्मर के अधिष्ठापन की नितांत आवश्यकता है।प्रधान ने सांसद या किसी भी उपयुक्त मद से उक्त दोनों कार्य पूर्ण करने की मांग की है।

बिजली के निजीकरण एवं घोर अनियमितता के खिलाफ माकपा ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

सहसों। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) फूलपुर क्षेत्रीय कमेटी तथा उत्तर प्रदेश किसान सभा ने मंगलवार को विद्युत उपकेन्द्र मलावां सहसों में बुनकरों को फ्लैट रेट पर तथा गरीबों को सस्ती बिजली देने के लिए तथा नलकूपों पर मीटर लगाने और बिजली के बढ़ते निजीकरण के खिलाफ प्रदर्शन कर 9 सूत्रीय मांगपत्र एस0 डी0 ओ0 झूंसी के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजा। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि बिजली आज की एक बुनियादी जरूरत है। और सरकार की जिम्मेदारी है कि वो उसे सस्ते दर पर सभी को उपलब्ध कराये। परन्तु हमारे प्रदेश में ऐसा नहीं हो रहा है। प्रदेश में बिजली पहले से ही मंहगी है। उस पर भी प्रदेश के नियामक आयोग ने 18 से 23 फीसदी दाम बढ़ाने का प्रस्ताव दिया था। व्यापक विरोध और 2024 में होने वाले संसदीय चुनावों के चलते इसे वापस भले ले लिया गया हो परन्तु उसका खतरा अभी भी बरकरार है। इसके अतिरिक्त किसानों के ट्यूबवेल में मीटर लगाये जा रहे हैं। किसानों को भरमाने के लिए सरकार भले ही कह रही है। परंतु किसानों को फ्लैट रेट पर ही क्या बिजली देगी। परन्तु किसानों के व्यापक विरोध के बावजूद विभाग नलकूपों पर मीटर लगाने से बाज नहीं आ रहा है। वास्तव में मीटर लगाने का मतलब ही यही है कि किसानों को बिजली का दाम फ्लैट रेट की बजाये मीटर के आधार पर ही देना पड़ेगा। इससे खेती की लागत और बढ़ जायेगी। इसी प्रकार प्रदेश के बुनकर भी लगातार फ्लैट रेट पर तथा कम दाम पर बिजली की मांग रहे हैं। जिसके अभाव में लूम बंद होने के कगार पर हैं। प्रदर्शन करते हुए भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), उत्तर प्रदेश किसान सभा, उत्तर प्रदेश खेत मजदूर यूनियन तथा सेण्टर ऑफ इण्डियन ट्रेड यूनियनस् इन सवालों पर एक व्यापक अभियान चला रही है। जिसके चलते 15 जून को त्रिवेणीपुरम्, झूंसी, 16 जून को कोरांव, 19 जून को तुलापुर, सिकंदरा तथा 20 जून को मलांवा सहसों में प्रदर्शन हुआ। इसी प्रकार 22 जून को सधनगंज सोरांव, 25 जून को मऊ आईमा के विद्युत उपकेन्द्रों तथा अंत में 5 जुलाई 2023 को अधिशाषी अभियंता कार्यालय जॉर्ज टाउन (मेडिकल कॉलेज के सामने) प्रदर्शन किये जायेंगे। माकपा ने बिजली की दरें कम करने, नलकूपों पर मीटर न लगाने, हैण्ड लूम पर मीटर लगाने का फैसला रद्द करने तथा पुरानी फ्लैट रेट व्यवस्था लागू करने, बिजली के निजीकरण पर रोक लगाने, उपभोक्ताओं पर गलत तरीके से गणना कर बढ़े हुए बिल भेजना बंद करने, भेजे गये गलत बिलों को रद्द करने, जर्जर लाइनें को बदलने तथा। ट्राँस्फार्मरों की क्षमता बढ़ाने, अघोषित और अनियमित विद्युत कटौती बंद करने, गरीब किसानों, खेत मजदूरों तथा बुनकरों और सभी गरीबों को मुफ्त बिजली देने तथा बिजली कर्मचारियों पर काम का लोड बढ़ाना बंद करने, रिक्त पदों पर स्थायी भर्ती करने, संविदा और ठेका कर्मचारियों को स्थायी कर्मचारी घोषित करने की मांग की। कार्यक्रम में माकपा फूलपुर क्षेत्रीय कमेटी के मंत्री मुन्नी लाल यादव, जिला मंत्री अखिल विकल्प, किसान सभा के जिला मंत्री अखिल विकल्प, रमाकांत, लल्लू प्रसाद, मोहन लाल, प्रभाकांत, राजकरन पाल आदि लोग उपस्थित थे।

हीटवेव से आम जनमानस परेशान मरीजों को निजि अस्पतालों पर भरोसा

अखंड भारत संदेश

सरकारी अस्पताल बना शो पीस, बाहर की दवा लिखना ,सही उपचार न होने से तीमारदार परेशान

मऊआइमा। इन दिनों लगातार पड रही गर्मी हीटवेव से कोई गांव घर नहीं बचा है जहां लोग बीमार न हों। सरकारी अस्पताल पर भरोसा कम निजि अस्पतालों पर भरोसा अधिक देखा कर मरीजों को भर्ती कराया जा रहा है। वैसे तो कई जिले हीटवेव की चपेट में है। लगातार पड रही शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी से कोई गांव नहीं बचा है जहां मरीजों की संख्या न बढ रही हो। बताया गया है कि हीटवेव के शिकार मरीजों को परिजन स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर नहीं ले जा रहे हैं। उनका कहना है कि डाक्टर ,से लेकर पूरा स्टाफ बहुत बडा लापरवाह है। मरीजों को अस्पताल के बाहर एक दर्जन मेडिकल स्टोर पर भेज कर दवा मंगाते हैं ।बताया गया है कि बीमारी कुछ और रहती है डाक्टर कुछ और समझ कर मात्र खानापूर्ति कर उपचार करने के लिए औषधियां लिख देते हैं। जिससे मरीजों की हालत गंभीर बन जाती है। मजबूरन तीमारदार निजि अस्पताल में मरीजों को ले जाकर भर्ती करा देता है। जहां निजि अस्पताल उपचार से मरीजों को ठीक तो जरूर कर लेते हैं मगर तीमारदार कंगाल जरुर हो जाता है ।कुछ निजि अस्पताल तो मरीज को शहर के बडे डाक्टरों को मरीजों को देखा कर उनका फामूर्ला लिखवा कर मऊआइमा ला कर अपने निजि अस्पताल में इलाज कर मोटी रकमें ऐंठने में मशगूल हैं। हीटवेव से प्रभावित मरीजों के कारण इन दिनों डाक्टरों की जमकर चांदी कट रही है। निजी अस्पताल बेलगाम होकर जमकर धनादोहन कर रहे हैं।

खबर संक्षेप

राम वाटिका और रामेश्वरम वाटिका में लोग करेंगे योग

शंकरगढ़। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर पूरे जनपद में योग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिला मुख्यालय पर जहां परेड ग्राउंड में मुख्य आयोजन होगा, वहीं गांव स्तर पर ग्राम पंचायतों के द्वारा और नगर निकायों में नगर पंचायतों द्वारा योग कार्यक्रम का आयोजन होगा। नगर पंचायत अध्यक्ष शंकरगढ़ पार्वती कोटार्य ने बताया कि नगर पंचायत शंकरगढ़ में योग दिवस पर मुख्य आयोजन रामेश्वरम वाटिका में होगा। ईओ चैतन्य कुमार तिवारी ने समस्त नगर वासियों का आह्वान किया है कि वह योग दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में सुबह साढ़े पांच बजे रामेश्वरम वाटिका पहुंचे और आसपास केलोगों को भी आयोजन में शामिल करवाएं। दूसरी तरफ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (महाराणाप्रताप शाखा) केद्वारा भी योग दिवस के मौके पर योग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

आरएसएस के शंकरगढ़ खंड का योग कार्यक्रम 21 जून को सुबह छह बजे से सात बजे तक नगर पंचायत शंकरगढ़ में स्थित रामवाटिका (पुरानी बाजार) में होगा।नगर के सह खंड कार्यवाह राजेश केसरवानी ने सभी से योग दिवस में शामिल होने की अपील की है।

शहरवासी परेड ग्राउंड पर करेंगे योग

जिलाधिकारी ने अफसरों संग कार्यक्रम स्थल का किया निरीक्षण

ओआरएस का घोल व दवाइयों संग मौजूद रहेंगे चिकित्सक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर परेड ग्राउंड पर शहरवासी एक साथ योग करेंगे। इसके लिए जिला प्रशासन की ओर से पुख्ता इंतजाम किए जा रहे हैं। तैयारियों का जायजा लेने के लिए जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री मंगलवार को अधिकारियों के साथ कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण करने पहुंचे थे। भीषण गर्मी को देखते हुए उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि मौके पर ओ आर एस व दवाईयों के साथ-साथ चिकित्सकों की टीम भी लगाई जाए। उन्होंने नगर निगम को कार्यक्रम स्थल पर पानी के छिड़काव, मोबाइल टॉयलेट, पीने के पानी एवं साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने योग दिवस में प्रतिभाग करने वाले लोगो के वाहनों की पार्किंग की समुचित व्यवस्था सुनिश्वित किए जाने के लिए अपर जिलाधिकारी नगर, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों को कहा है। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम स्थल पर सेल्फी प्वाइंट, रंगोली एवं सैंड आर्ट बनाए जाने के लिए भी कहा है, जो आकर्षण का केंद्र होगा। योग का कार्यक्रम सुबह 05ः बजे से 08ः बजे तक अआयोजित होगा। इसे सकुशल ढंग से संपन्न कराने के लिए जिलाधिकारी ने अधिकारियों के दायित्व निर्धारित किए हैं। उन्होंने कहा कि योग का मुख्य कार्यक्रम परेड ग्राउं पर होगा, इसके साथ ही साथ प्रत्यक ग्राम पंचायतो, न्याय पंचायतों, स्थानीय निकायों व अन्य स्थलों में भी योग कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस वर्ष योग दिवस की थीम हर घर-आंगन योग रखा गया है, जिससे योग के माध्यम से प्रत्येक परिवार को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके। योगा कार्यक्रम के तहत योग करने वाले प्रत्येक व्यक्ति आयुष कवच पर योग करते हुए अपना फोटो अवश्य अपलोड कें। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी आशु पांडेय, जिला विकास अधिकारी भोलानाथ कनौजिया, बी एस ए प्रवीण तिवारी, आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. शारदा प्रसाद व अन्य रहे।

उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र प्रांगण में क्रियायोग गुरू के सानिध्य में मनाया जाएगा योग दिवस

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। 9 वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज के प्रांगण में क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी के सानिध्य में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। यह कार्यक्रम सुबह समय प्रातः 7:00 बजे से प्रारंभ होगा । बता दें कि यह कार्यक्रम संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार एवं क्रियायोग अनुसंधान संस्थान झूंसी प्रयागराज के संयुक्त तत्वाधान में मनाया जाएगा । हालांकि कार्यक्रम में देश ही नहीं विदेशों के साधक भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में उपस्थित रहेंगे।

एक्यूप्रेशर संस्थान में मनाया जाएगा योग दिवस

झूंसी। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बुधवार को क्षेत्र के स्कूल कालेजो के साथ सरकारी एव गैर सरकारी संस्थानों में उत्साह के साथ मनाया जाएगा। जिसकी तैयारी योग दिवस की पूर्व संध्या पूरी हो गई है। एक्यूप्रेशर संस्थान की उर्वशी उपाध्याय ने बताया कि संस्थान के तत्वावधान में मुख्यालय मिंटो रोड में प्रातः 08:30 बजे से तथा एमपी खेमका महाविद्यालय छतनाग, प्रयागराज में प्रातः 7.00बजे से योग कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में संस्थान के प्रवर समिति, क्रियान्वयन समिति के सदस्य, उपचारकों सहित बड़ी संख्या में लोगों के भाग लेगे।

भगवान जगन्नाथ जी की यात्रा बड़े धूमधाम से निकली

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी में भगवान जगन्नाथ यात्रा का शुभारंभ महर्षि महेश योगी आश्रम परिषद आश्रम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव आश्रम प्रभारी बसंत दास आचार्य विमल मिश्रा मुखिया अचार्य ऋषि त्रिवेदी मंदिर प्रभारी धर्मेंद्रश्रीवास्तव पहलाद नायक मुख्य पुजारी बिरंचि सतपति जितेंद्र दास पहलाद नायक राजकुमार श्रीवास्तव सुरेश श्रीवास्तव जय मंगल यादव राम मंगल गुप्ता भारत यादव डॉक्टर जेपी श्रीवास्तव संजयश्रीवास्तव श्रीकांत तिवारी बाजपेई जी तेग बहादुर सैकड़ों भक्त गणों ने भगवान जगन्नाथ जी की यात्रा को खींचते हुए आश्रम परिसर से लेकर सोमेश्वर नाथ बांध रोड होते हुए पुणे आश्रम परिषद में मंदिर परिषद में भगवान जगन्नाथ जी की यात्रा को चारों ओर घुमाते हुए खींचते हुए भक्तों ने आश्रम परिसर में लेकर के आए भक्तों मौजूद थे।

नैनी में सूरज की लुकाछिपी के बीच पारा लुढ़का

अखंड भारत संदेश

40 डिग्री सेल्सियस पहुंचा पारा आज तेज आंधी और बारिश की संभावना

नैनी। नैनी प्रयागराज में मंगलवार की सुबह से ही बादलों के बीच सूरज की लुकाछिपी चल रही है। बादलों के कारण तापमान में गिरावट दर्ज किया गया है। सोमवार को अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 29 डिग्री सेल्सियिस दर्ज किया गया। अभी तक अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस, जबकि न्यूनतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह रहा था। इससे लोगों को भीषण गर्मी का एहसास हो रहा था। रात के और दिन के तापमान में औसतन चार से पांच डिग्री सेल्सियस की कमी होने से लोगों को गर्मी से थोड़ी निजात मिली है। मौसम विभाग ने 21 जून को तेज आंधी के साथ पानी आने का पूर्वानुमान जताया है। प्रयागराज में भले ही मंगलवार की सुबह से ही बादलों का डेरा हो पर सुबह 9:00 बजे तापमान 36 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पिछले कई दिनों से सुबह 9:00 से 10ः के बीच 39 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान रह रहा था। सुबह 3 डिग्री सेल्सियस तापमान में गिरावट दर्ज होने और अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस आ जाने के कारण गर्मी से थोड़ी राहत मिली है। एसी कूलर और पंखे का असर थोड़ा बड़ा है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वायुमंडलीय विज्ञान विभाग के प्रोफेसर शैलेंद्र राय के मुताबिक 21 जून को तूफान बिपरजॉय का असर प्रयागराज और उसके आपास के जिलों में देखने को मिलेगा। यहां तेज आंधी और बारिश की संभावना है। अगर ऐसा हुआ तो औसत तापमान में चार से पांच डिग्री सेल्सियस कर्मी दर्ज होगी।

भीषण गर्मी व तेज धूप अब लोगों के लिए खतरनाक

24 घंटे में 3 लोगों की धूप और लू लगने से हुई मौत एक्सपर्ट बोले-धूप में बाहर न निकलें

एसआरएन, काल्विन व बेली हास्पिटल में मरीजों की ओपीडी बढ़ गई

प्रयागराज। भीषण गर्मी और तेज धूप अब लोगों के लिए खतरनाक और जानलेवा साबित होने लगा है। बीते 24 घंटे में गर्मी और धूप की चपेट में आने से तीन लोगों की मौत भी हो गई है। वहीं फिजिशियन की ओपीडी में भी मरीजों की संख्या बढ़ने के साथ साथ अस्पतालों में भर्ती मरीजों की संख्या में वृद्धि हो रही है। मोतीलाल नेहरू मंडलीय अस्पताल (काल्विन) के सीनियर फिजिशियन डॉ. केके मिश्र कहते हैं कि सुबह 10 बजे से शाम पांच तक तक बाहर न निकलें। यदि निकलना जरूरी हो तो छाता लेकर निकलें और शरीर को पूरी तरह से ढक कर रखें। हीट स्ट्रोक का खतरा शरीर में पानी की कमी से होता है, इसलिए प्यास न लगने पर भी बीच-बीच में पानी पीते रहें। कबाड़ बीन रहे वृद्ध की मौत कौशांबी जनपद के पिपरी खुर्द गांव का असलम (60 वर्ष) अटाला में रहकर कबाड़ का काम करता है। कोतवाली पुलिस के मुताबिक, उसका शव कोतवाली के पास पाया गया। तेज धूप लगने की वजह से उसकी जान चली गई। इसी तरह करेली पुलिस चौकी के पास एक -एक युवक गिरा और उसकी मौत हो गई। वह कहां का रहने वाला है इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। इसी तरह हरवारा धूमनगंज की रहने वाली 50 वषीर्या शांति देवी खुल्दाबाद मजार पर गई थीं जहां अचेत होकर गिर गई और वहीं पर मौत हो गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को ही निर्देशित किया है कि अस्पताल में आने वाले मरीजों को किसी तरह की परेशानी न होने पाए। इसके बाद जिले में भी अलर्ट हो गया है। स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल, तेज बहादुर सप्रू अस्पताल, मोतीलाल नेहरू मंडलीय अस्पताल समेत अन्य अस्पतालों में अलर्ट किया गया है। सीएमओ डॉ. आशु पांडेय बताते हैं। कि जिले के सभी सीएच्सी, पीएचसी समेत मुख्यालय के अस्पतालों को भी अल्ट किया गया है।

धूमधाम से निकला भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। आज प्रयागराज शहर में श्री जगन्नाथ जी का रथ यात्रा अपनी भव्यता के साथ आर्य भवन हाटकेश्वर मंदिर जीरो रोड प्रयागराज से प्रारंभ होकर एस सी बसु, चमेली देवी धर्मशाला, हीवेट, जानसेन गंज, नीम का पेड़, चौक, बहादुरगंज, राम भवन चौराहा से मुट्ठीगंज चौराहा हटिया, बांसमंडी, बलुआ घाट चौराहा से कटघर चौराहा से काशी राजनगर परिसर में बड़ा पार्क प्रयागेश्वर नाथ मंदिर पर विश्राम लिया। श्री जगन्नाथ जी महोत्सव समिति से दुर्गा प्रसाद गुप्ता अध्यक्ष, गगनदास गुप्ता महामंत्री, जयराम गुप्ता कोषाध्यक्ष, अनिल केसरवानी रथचालक त्रिलोकी केसरवानी द्वारा कार्यक्रम को आयोजित किया गया जिसमे अनेकों प्रतिभागी ने भाग लिया और पूरा शहर भीड़ से खचाखच भरा मिला दर्शनार्थियों में रथ को खींचने की उमंग थी सच्चे मन से बिना कोई भेदभाव से सभी ने सहयोग किया जिसने चमेली देवी धर्मशाला पर सभी सदस्यो और पदाधिकारियो को स्वागत एवम जलपान की व्यवस्था किया गया जिसने मनोज रावत आस्था मशीनरी, शलभ पाण्डेय, पाण्डेय इंजीनियरिंग मिल स्टोर, प्रदीप अग्रवाल , अग्रवाल इंजीनियरिंग, बादशाही मंडी व्यापार मण्डल के अध्यक्ष रंजीत यादव, श्री सिद्धिविनायक सेवा समिति के अध्यक्ष रत्नेश यादव, अरविन्द पाण्डेय पत्रकार, संजय कुशवाहा नीरज इलेक्ट्रिक, रानू पाठक, पवन गौड़, सूरज पवन मिश्रा अधिवक्ता, सक्षम गुप्ता विनय यादव, भानु प्रताप रितेश गुप्ता बब्लू जैन, विवेक, प्रकाश आदि लोग उपस्थिति थे।

मुस्लिम भाइयों ने रथयात्रा का किया स्वागत किया

प्रयागराज। बहादुरगंज मे मुस्लिम समाज के लोगों ने भगवान जगरनाथ रथ यात्रा का इस्तकबाल किया हिंदू मुस्लिम सद्भाव मंच के अध्ययन इरशाद उल्ला ने जगन्नाथ यात्रा कमेटी के लोगों को माला पहनाया कमेटी के बसंत लाल आजाद, कृष्ण भगवान केसरवानी, संतोष आनंद, ने कहा मुस्लिम द्वारा जो स्वागत किया जा रहा है वह गंगा जमुनी तहजीब की एक पहचान अपने प्रयागराज में देखने को मिलती है यहां पर सब एक साथ मिलजुल कर त्योहारों को मनाते हैं। यात्रा में चल रहे श्रद्धालु को पेठा बोतलबंद ठंडा पानी व सरबत पिला कर रथ यात्रा को आगे को रवाना किया। भगवान जगन्नाथ की यात्रा में चल रहे लोगों ने मुस्लिम भाइयों के द्वारा भगवान जगन्नाथ यात्रा का स्वागत करने की सभी लोग प्रशंसा कर रहे हैं। हिंदू मुस्लिम सदभाव मंच के अध्यक्ष इरशाद उल्ला ने कहा जहां एक तरफ पूरे भारत में नफरत फैलाई जा रही है वही प्रयागराज के मुस्लिम भाइयों ने मोहब्बत भाईचारे का पैगाम दिया है पूरा देश मोहब्बत के पैगाम से ही आगे बढ़ेगा देश तरक्की उन्नति और प्रगति शील भारत तभी बनेगा जब हम एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहें एक-दूसरे के त्योहारों में सहयोग करें।स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से मोहम्मद शाहिद कुरेशी, मोहम्मद जकी, इमरान, मोहम्मद राजी, फरीद खान, कमरुल अंसारी, अनूप पांडे, सुशील मालवीय, आशीष रावत, आदि लोग उपस्थित रहे।

प्रॉपर्टी डीलर को गोली मारने वाले का पूरा परिवार फरार

आरोपी की तलाश में झूंसी पुलिस के साथ क्राइम ब्रांच भी लगी है

झूंसी। प्रॉपर्टी डीलर शिव मूरत यादव के पैर में गोली मारने वाले प्रॉपर्टी डीलर का पूरा परिवार घर में ताला बंद कर फरार है। झूंसी पुलिस के साथ क्राइम ब्रांच आरोपी की तलाश में छापेमारी कर रही है पर उसका अभी तक कोई सुराग नही लगा। हवेलिया निवासी शिव मूरत यादव प्रापर्टी डीलर है। उसकी छतनाग रोड पर मार्केट है जिसमें उसी में कार्यालय है सोमवार की दोपहर वह अपने कार्यालय में बैठा था तभी नयका महीन गांव निवासी राम नारायण यादव उर्फ गुड्डू पहुंचा और किसी बात को लेकर दोनों में विवाद शुरू हुआ तभी नारायण यादव उर्फ गुड्डू ने अपनी लाइसेंसी पिस्टल निकालकर शिव मूरत यादव पर गोली चला दी गोली शिव मूरत यादव के पैर में लगी आरोपी गुड्डू यादव मौके से फरार हो गया। बताया जाता है की शिवमूरत व राम नारायण दोनों दोस्त थे। दोनों घंटो साथ रहते थे। वारदात के कुछ घंटे पहले दोनों स्कूटी से घूमते देखे गए थे। हालांकि अभी यह स्पस्ट नही हो पाया कि राम नारायण ने अपने अपने जिगरी दोस्त शिव मूरत को किस बात से खफा हो कर गोली मारी। पुलिस गुड्डू यादव के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश में छापेमारी कर रही है बताया जाता है कि गुड्डू यादव का पूरा परिवार घर में ताला बंद कर फरार है पुलिस उसके शस्त्र निरस्तीकरण की भी कार्रवाई कर रही है।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एम्पलाइज स्टेट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन की इंश्योरेंस पॉलिसी नंबर 12110 990 10 में मेरा नाम भूलवश गौतम मिश्रा पुत्र सोहनलाल मिश्रा लिख गया है जो गलत है मेरा सही नाम त्रिभुवन मिश्रा पुत्र सोहनलाल मिश्रा निवासी ग्राम ऊनो तहसील मंझनपुर जनपद कौशांबी है। अन्य सरकारी अभिलेखों में भी मेरा सही नाम त्रिभुवन मिश्रा अंकित है।

बरगढ़ क्षेत्र में धूमधाम से निकाला गया भगवान श्री जगन्नाथ जी का रथ यात्रा

2023/06/20 15:39

अखंड भारत संदेश

बरगढ़ प्रयागराज। मंगलवार को भगवान श्री जगन्नाथ जी का रथ यात्रा बरगढ़ क्षेत्र में भव्यता के साथ निकाला गया । रथयात्रा में प्रयागराज शहर से कई साधु संत भी उपस्थित हुए । इस रथ यात्रा की अगवानी प्रयागराज शहर के गिरिनार बाबा आश्रम के कृपा पात्र शिष्य ब्रह्मचारी भैरव बाबा ने अपने कई शिष्यों के साथ पहुंचकर भगवान जगन्नाथ जी का भव्य पूजन अर्चन करते हुए किया । रथ यात्रा के दौरान बरगढ़ थाने से पूरी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे तथा बरगढ़ स्पेक्टर अपने कई हमराहीओं के साथ स्वयं भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथ यात्रा में मौजूद रहे । बता दें कि यह रथयात्रा बरगढ़ ग्राम पंचायत क्षेत्र में निकाला गया तथा क्षेत्र के सभी धार्मिक स्थलों से होते हुए पूरे बरगढ़ बाजार में घुमाया गया । रथ यात्रा के साथ बरगढ़ ग्राम पंचायत के प्रधान शैलेश कुमार शुक्ला अपने समस्त कार्यकताओं के साथ रथ यात्रा में मौजूद रहे । इस रथयात्रा में मुख्य रूप से शालिराम शुक्ला, ओम प्रकाश शुक्ला,शाश्वत शुक्ला, सतीश शुक्ला, शशि शुक्ला ,रवि शुक्ला, संतोष शुक्ला, अंकित शुक्ला, अंकेश शुक्ला, बच्चा, विष्णु तथा बरगढ़ ग्राम पंचायत के कई अन्य प्रतिष्ठित लोग भी मौजूद रहे ।

किराये के कमरे में मृत मिला युवक

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र के चकदाउदनगर इलाके में किराये पर रह रहा एक युवक मंगलवार सुबह अपने कमरे में मृत मिला। मकान मालिक की सूचना पर पहुंची नैनी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार श्रीरामपुर बलिया के श्री राम गौड़ का बेटा अनिल(३५) चकदाउनगर इलाके में सुमन देवी के घर में किराये पर रहकर मेहनत मजदूरी करता था। उसके जीजा एवं बहन भी औद्योगिक थाना क्षेत्र में रहते हैं। बताते है कि अनिल शराब का आदी था। मंगलवार सुबह वह अपने कमरे में मृत अवस्था मिला। जानकारी मिलने पर जीजा और बहन भी वहां पहुंच गये। आशंका है कि शराब पीने से उसकी मौत हुई है। हालांकि पोस्टमार्टम में उसकी मौत का सही कारण स्पष्ट हो सकेगा।

कार्यालय नगर पंचायत अझुवा, जनपद- कौशाम्बी

विशेष अपील

9वीं अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून 2023)

" पूरे मनोयोग से घर पर करें योग, रहें निरोग"

नगर पंचायत के निम्नलिखित कार्यो में
अपना सहयोग प्रदान करके बनें जिम्मेदार नागरिक

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यालय नगर पंचायत अझुवा आपके निम्नलिखित अपील करता है।

1. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2023 को श्री हनुमान इण्टर कालेज प्रांगण में प्रातः 06:00 बजे से 08:00 बजे तक शिविर/आयोजन में सम्मिलित होकर सामूहिक योग में प्रतिभाग करें।
2. घर अथवा दुकान में जनित होने वाले गीला कूड़ा हरे डस्टबिन में एवं सूखा कूड़ा नीले डस्टबिन में अलग-अलग एकत्र करें।
3. खुले में पेशाब व शौच न करें, निकाय में निर्मित सामुदायिक /सार्वजनिक शौचालयों का प्रयोग करें। खुले में शौच/पेशाब करने पर जुर्माना वसूल किया जायेगा।
4. नगर में अपने पशुओं को खुला न छोड़े अन्यथा पकड़े जाने पर जुर्माना वसूल किया जायेगा।
5. ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन नियम 2016 के अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति स्वयं उत्पन्न ठोस कचरे को अपने परिसर के बाहर सड़कों, खुले सार्वजनिक स्थलों पर, नाली में या जलीय क्षेत्रों में न तो फेंकेगा या जलायेगा अथवा नही दफनायेगा।
6. प्रत्येक नागरिक प्रति वर्ष 01 पेड़ अवश्य लगाये और पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपना पूर्ण योगदान दें।

साकेत चन्द्र श्रीवास्तव
लेखा लिपिक
नगर पंचायत अझुवा
कौशाम्बी

(सुभाष चन्द्र सिंह)
अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत अझुवा
कौशाम्बी

समस्त सदस्यगण
नगर पंचायत अझुवा
कौशाम्बी

(शान्ती देवी)
अध्यक्ष
नगर पंचायत अझुवा
कौशाम्बी

पत्रांकः 107/न0पं0अझुवा/2023-24 दिनांक 20.06.2023

मॉर्निंग वॉक पर निकले वृद्ध की सड़क हादसे में मौत

अखंड भारत संदेश

सड़क हादसे की जानकारी मिलते ही परिवार में मचा कोहराम

हर्रायपुर कौशांबी। सांदीपन घाट थाना क्षेत्र के मूरतगंज कस्बे के रहने वाले एक बृद्ध प्रतिदिन सुबह 4 बजे सड़क पर मॉर्निंग वॉक करते थे मंगलवार की सुबह 4 बजे वृद्ध मॉर्निंग वॉक पर निकले थे और मूलगंज कस्बे की सड़क पर मॉर्निंग वॉक कर सेहत बना रहे थे इसी बीच किसी ट्रक ने वृद्ध को कुचल दिया है जिससे घटनास्थल पर वृद्ध की तड़प तड़प कर दर्दनाक मौत हो गई है सड़क दुर्घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे हैं मामले की सूचना वृद्ध के परिजनों समेत पुलिस को दिया है सूचना पाकर मौके पर रोते बिलखते मृतक के परिजन भी पहुंच गए हैं हादसे की जानकारी मिलती ही मौके पर स्थानीय पुलिस पहुंची है और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है हादसे के बाद वाहन चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया है घटनास्थल पर कोहराम मचा हुआ है जानकारी के मुताबिक सांदीपन घाट थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी मूरतगंज अंतर्गत कशिया रोड मौजा पल्हना निवासी भैया लाल गुप्ता उम्र 68 वर्ष महादेव प्रसाद गुप्ता मंगलवार की सुबह 4:00 बजे घर से सड़क पर मॉर्निंग वॉक पर निकले थे जैसे ही वह पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग पर पहुंचे और टहलने लगे इसी बीच एक वाहन ने उन्हें टक्कर मार दिया है ट्रक की टक्कर लगते ही बृद्ध सड़क पर गिर पड़े हैं सड़क पर चारों और खून बिखर गया है जिससे घटनास्थल पर उनकी तड़प तड़प कर दर्दनाक मौत हो गई है मामले की सूचना मिलते ही मौके पर लोगो की भीड़ लग गई है उनके परिजनों को मामले की जानकारी दी गई है हादसे की जानकारी मिलते ही उनके बेटे जयप्रकाश गुप्ता समेत उनका पूरा परिवार रोते बिलखते घटनास्थल पहुंच गया है सूचना पाकर पहुंची चौकी पुलिस ने बृद्ध के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

सड़क पर मॉर्निंग वॉक कर सेहत बनाने से नहीं मानते लोग

हर्रायपुर कौशाम्बी। मूरतगंज कस्बे सहित जिले के विभिन्न क्षेत्रों में सड़क पर सुबह मॉर्निंग वॉक करने की प्रथा एक परंपरा बनती जा रही है मुख्य सड़क से हटकर लोग मॉर्निंग वॉक करने में तौहीनी समझते हैं जबकि सड़कों पर जोखिम अधिक हैं लेकिन उसके बाद भी सड़क पर मॉर्निंग वॉक करने में लोग अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं जिससे आए दिन मॉर्निंग वॉक के दौरान सड़क पर हादसे होते हैं सड़क पर मॉर्निंग वॉक की प्रथा पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाए जाने की जरूरत है सड़कों पर मॉर्निंग वॉक करने की प्रथा को आला अधिकारियों को गंभीरता से लेते हुए स्थानीय थाना और पुलिस चौकी को निर्देशित करते हुए सड़क पर मॉर्निंग वॉक करने वालों पर कठोर कार्यवाही करने के निर्देश दिए जाने की जरूरत है।

बाइक चोर को श्रद्धालुओं ने पकड़कर पुलिस को सौंपा

कौशांबी। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के कुबरी घाट कड़ा में मंगलवार को स्नान करने पहुंचे श्रद्धालुओं की बाइक चोरी कर उसे ले जाने वाले बाइक चोर पर श्रद्धालुओं की नजर पड़ गई बाइक में चाबी लगाकर चोरी करने का प्रयास बाइक चोर कर रहा था बाइक चोरी कर रहे चोर को रंगे हाथ श्रद्धालुओं ने गंगा घाट से पकड़ लिया पकड़े गए चोर को श्रद्धालुओं ने कड़ा धाम थाना पुलिस को बुला कर चोरी की बाइक समेत सौंप दिया है खबर लिखे जाने तक बाइक चोर पर कड़ा धाम कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जेल नहीं भेजा है।

निरोधात्मक कार्यवाही में 26 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से दो थाना पश्चिम शरीरा से दस थाना कौशाम्बी से दो थाना सराय अकिल से दो थाना चरवा से दो थाना कोखराज से पांच थाना सैनी से एक थाना कड़ाधाम से दो कुल 26 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

बाइक सवार को ट्रक ने कुचला घटनास्थल पर हुई मौत

ट्रक के पहिए में फॅस कर 50 मीटर से अधिक दूरी तक घिसटता रहा बाइक सवार

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशांबी। कड़ा धाम थाना क्षेत्र के देवीगंज बाजार में एक बाइक सवार को तेज गति अनियंत्रित ट्रक ने कुचल दिया है जिससे बाइक सवार ट्रक टायर के नीचे फंस गया और 50 मीटर से अधिक दूरी तक पहिए में फंसा बाइक सवार घर घसीटता चला गया जिससे घटनास्थल पर तड़प तड़प कर बड़ी बीभत्स उसकी दर्दनाक मौत हो गई है मामले की सूचना मिलते ही मौके पर लोगों की भीड़ लग गई सूचना पुलिस को दी गई सूचना मिलते ही घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस पहुंची है और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है हादसे के बाद ट्रक चालक ट्रक सहित मौके से फरार हो गया है जिसकी पुलिस तलाश कर रही थी दोपहर बाद पुलिस ने वाहन सहित चालक को हिरासत में ले लिया है। घटनाक्रम के मुताबिक आलम पुत्र सरताज आलम निवासी सुल्तानपुर घोष जनपद फतेहपुर बाइक से किसी काम से सैनी कोतवाली की ओर जा रहे थे जैसे ही बाइक सवार आलम देवीगंज तिराहे के पास पहुंचे सामने से आ रही तेज गति ट्रक चालक ने बाइक सवार को कुचल दिया है हादसे में बाइक सवार आलम ट्रक के पहिए में फंस गए और 50 मीटर से अधिक दूरी तक वह घिसटते चले गए जिससे घटनास्थल पर चारों ओर खून बिखर गया बड़े बीभत्स तरीके से तड़प तड़प कर घटनास्थल पर उनकी दर्दनाक मौत हो गई सड़क पर दुर्घटना देखकर आसपास के लोग घटनास्थल पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया बाइक सवार को कुचलने के बाद वाहन समेत ट्रक चालक भागने में सफल रहा जिसे पुलिस ने घेराबंदी कर बाद में पकड़ लिया है आरोपी चालक के खिलाफ पुलिस कार्यवाही कर रही है हादसे की सूचना मृतक के परिजनों को पुलिस ने दी है सूचना मिलते ही रोते बिलखते मृतक के परिजन मौके पर पहुंच गए हैं।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत,अर्थी से शव उठाकर पुलिस ने भेजा पोस्टमार्टम

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशांबी। नगर पंचायत सिराथू के वार्ड न 1 में महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई महिला के मायके वालों ने दहेज की मांग पूरी न होने पर हत्या का आरोप लगाया है महिला के मौत के बाद उसके मायके के लोगों के आने से पहले शव का अंतिम संस्कार करने की तैयारी ससुराली जन करने लगे अर्थी सजा दी गई मायके के लोगों ने पुलिस को मामले की सूचना दी पुलिस ने मृतक महिला के शव को अर्थी से अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक सुनीता देवी पत्नी स्व. सुरेंद्र कुमार निवासी काजीपुर थाना कड़ा धाम ने सैनी कोतवाली में तहरीर देकर बताया 2 वर्ष पहले उसने अपनी हैसियत के अनुसार दान दहेज देकर अपनी पुत्री पुष्पा का विवाह राजेंद्र कुमार निवासी वार्ड न 1 सिराथू के साथ धूमधाम से किया था शादी के बाद से ही दहेज के लिए उसकी लडकी पुष्पा को प्रताड़ित किया जाता था,बीती शाम दहेजलोभियों ने उसकी पुत्री को मारकर फांसी पर लटका दिया और आत्महत्या करने की हमे सूचना दी ऐसी सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने दाह संस्कार की तैयारी कर रहे राजेंद्र कुमार के परिजनों से शव को अर्थी से कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज कार्रवाई में जुट गई है।

पट्टे की जमीन पर काबिज होने के लिए अधिकारियों की चौखट पर दौड़ रहे गरीब

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत शेषा के गरीब राजकुमार राधा–कृष्ण कंचन लाल आदि बीते कई वर्षों से अपने पट्टे की भूमि पर काबिज होने के लिए अधिकारियों के चौखट पर दौड़ रहे हैं लेकिन उनके नाम आवंटित पट्टे की जमीन पर गांव के दबंगों ने कब्जा कर लिया है और बराबर राजस्व लेखपाल और तहसील के अधिकारी अवैध तरीके से काबिज दबंगों का साथ दे रहे हैं जांच के नाम पर लेखपाल लगातार अधिकारियों को गुमराह कर सूचना दे रहा है कि शिकायतकर्ता अपनी जमीन पर काबिज है जबकि मौके पर शिकायतकर्ता काबिज नहीं है 3 जून को समाधान दिवस में 2 जून को जिलाधिकारी की चौखट पर और फिर 19 जून को जिला अधिकारी की चौखट पर पीड़ित लोगों ने फरियाद की है इसके पहले भी कई बार अधिकारियों की चौखट में गरीब फरियाद कर चुके हैं लेकिन दबंगों के तहसील से सांठगांठ के चलते पट्टे की भूमि पट्टा धारकों को कब्जा नहीं मिल रहा है।

स्कूली छात्रा की गला घोटकर हत्या

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के टिकरा गांव में एक स्कूली छात्रा की गला घोटकर हत्या कर दी गई है हत्या करने के बाद मौके पर लोग पहुंच गए हैं जिससे गले में फँसे दुपट्टे को हटाया नहीं जा सका है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के टिकरा गांव निवासी सोनम पाल उम्र 17 वर्ष पुत्री धर्मपाल हाई स्कूल की छात्रा है मंगलवार को संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत हो गई है बालिका के गले में दुपट्टा फसाकर गला घोट कर मौत के घाट उतारा गया है बालिका की हत्या किए जाने के पीछे क्या कारण है यह स्पष्ट नहीं हो सका है बालिका की मौत की जानकारी मिलते ही मौके पर गांव के तमाम लोग पहुंच गए हैं मामले की सूचना पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने बालिका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है बालिका की मौत परिजन जुबान खोलने को तैयार नहीं है।

न्यूज झरोखा

खूबियों से भरा है पैशन प्लस का नया अवतार : शेखर जयसवाल

कौशांबी। हीरो मोटोकॉर्प के नई बाइक पैशन प्लस के नए अवतार की लांचिंग के समय बाइक एजेंसी संगम ऑटोमोबाइल्स मंझनपुर के प्रोपराइटर शेखर जयसवाल ने कहा कि हीरोमोटोकॉर्प द्वारा लांच की गई नई नए अवतार की बाइक पैशन प्लस खूबियों से भरपूर है ग्राहकों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर पैशन प्लस 2023 मॉडल के नए अवतार की लॉन्चिंग कंपनी ने की है। जनपद मुख्यालय मंझनपुर की ओसा रोड स्थित संगम ऑटोमोबाइल्स में मंगलवार को फैशन प्लस के नया अवतार ु56 इंजन के साथ इस स्पेशियश यूटिलिटी केस मोबाइल चार्जिंग पोर्ट डिजिटल एनालॉग मीटर एवं नए ग्राफिक्स युक्त नई पैशन प्लस 2023 के मॉडल बाइक की लांचिंग तमाम ग्राहकों के बीच केक काटकर हीरो बाइक एजेंसी के प्रोपराइटर शेखर जयसवाल ने किया है बाइक लॉन्चिंग के समय उन्होंने ग्राहकों को बाइक की खूबियों से परिचित कराया इस मौके पर उपस्थित लोगों को केक और मिठाई खिलाई गयी इस मौके पर शशि शेखर जयसवाल सुशील केसरवानी वरिष्ठ पत्रकार आलोक मिश्रा सूरज मौर्य मनीष कुशवाहा मिथुन अग्रहरि मोहम्मद इदरीस अहमद राबिया खातून आलिया प्रीति राज श्रीराम धर्मेंद्र सिंह शिव कुमार अरविंद सहित बाइक एजेंसी के कर्मचारी मैनेजर ग्राहक सहित तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहे।

आरओ के पानी में कहीं नाली का गन्दा पानी तो नहीं!

भरवारी में आपूर्ति होने वाले आरओ पानी की हकीकत से लोग परेशान

भरवारी कौशांबी। नगर पालिका परिषद भरवारी अंतर्गत कस्बा में आपूर्ति किए जा रहे आरओ पानी के मामले में कही नाले का गंदा पानी को लोगों तक नहीं सप्लाई किया जा रहा है बता दे कस्बा भरवारी में आपूर्ति होने वाला आर ओ पानी की हकीकत जान लेंगे तो आप लोग भी आर ओ का पानी नही पीना पसंद करेंगे। जिस आर ओ पानी का नगर वासी बहुत ही बेसर्बी से इंतजार किए करते है वह पानी शुद्ध की जगह अशुद्ध एवम गंदे नाले में आए दिन गिरता हुआ देखा जा सकता है जिसे पानी सप्लाई करने वाला व्यक्ति नाले में गिर जाने के बाद तुरंत उठाकर फिर उसी पानी को लोगो तक पहुंचाता है जिसे लोग आर ओ का शुद्ध वा ठंडा पानी समझ कर खुद वा दूसरे को भी पिलाते है 'यह वाकया एक बार का नही है इस तरह की लापरवाही को अकसर देखा जा सकता है लेकिन कौन कहे इस तरह की कार्य प्रणाली को काफी लोग देख भी चुके है परंतु जिम्मेदारो से कहना उचित नहीं समझा। जब देखते देखते लोग थक गए तब इसकी वीडियो बनाकर आप तक पहुंचाने का लोगो ने मन बनाया है आप लोग भी इस वीडियो को देख सकते है कि हम लोग शुद्ध आर ओ का पानी पी रहें है कि नही लोग आर ओ के नाम पर गदे नाले का पानी पी रहें है यह जांच का विषय है ' नगर पालिका अध्यक्ष कविता पासी से लोगो ने कहा है कि इस तरह के कार्य प्रणाली को संज्ञान लेते हुए तत्काल कार्यवाही होनी चाहिए।

कप्तान के ऊपर फर्जी आरोप की साजिश रचने वाला मास्टरमाइंड कौन!

अखंड भारत संदेश

महिला के मन मस्तिष्क को पलट कर साजिश रचने वाले मास्टरमाइंड को बेनकाब करने की जरूरत

कौशाम्बी। महिला फॉलोवर का वीडियो वायरल होने के बाद जिले की राजनीति में जिस तरह से सोमवार की दोपहर बाद भूचाल आ गया और अचानक मंगलवार की सुबह महिला फॉलोवर का दूसरा वीडियो आने के बाद भूचाल खत्म हो गया यह जन चर्चा का विषय बन गया पुलिस कप्तान पर गंभीर आरोप लगाने वाली महिला फॉलोवर के पीछे आरोप की साजिश रचने वाला मास्टरमाइंड कौन है किस व्यक्ति ने झूठे तरीके से पुलिस कप्तान पर आरोप लगाने की साजिश रची है झूठी साजिश रचकर पुलिस कप्तान को फसाने की मंशा रखने वाला यह मास्टरमाइंड काफी शक्तिशाली हो सकता है किसी कमजोर व्यक्ति का यह साहस नहीं होगा कि वह झूठी साजिश रच कर पुलिस कप्तान को फंसाने का कुचक्र करें हालांकि महिला फॉलोवर का दूसरा वीडियो आने के बाद सबकुछ साफ हो गया है पुलिस कप्तान बेदाग थे बेदाग है लेकिन सवाल उठता है कि बिना सिर पैर के इतनी गंभीर साजिश रचने वाले मास्टरमाइंड का पुलिस कप्तान से क्या मामला है जिससे मास्टरमाइंड ने इतनी बड़ी साजिश रच कर पुलिस कप्तान को फंसाने का कुत्सित प्रयास किया और उनके बेदाग छवि पर दाग लगाने का भरसक प्रयास किया लेकिन पुलिस कप्तान की छवि सोने के जैसे चमकती थी चमकती है और चमकती रहेगी पुलिस कप्तान पर कीचड़ उछालने वाला अचानक खुद ही चारों खाने चित हो गया है पुलिस कप्तान पर गंभीर आरोप लगाने वाली महिला फॉलोवर मंगलवार की सुबह अपने बयान से मुकर गई है और उसने कहा है कि उसके साथ पुलिस कप्तान ने कुछ गलत नहीं किया है वह झूठ बोलकर पुलिस कप्तान पर आरोप लगा रही थी महिला फॉलोवर ने दूसरा वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल किया है लेकिन अब सवाल उठता है कि महिला के पीछे वह शक्तिशाली मास्टरमाइंड कौन है जिसने महिला के मन मस्तिष्क को बदलकर उसे पुलिस कप्तान के विरुद्ध बयान देने के लिए तैयार कर दिया इतना ही नहीं पुलिस कप्तान के विरुद्ध बयान को लेकर महिला ने वीडियो वायरल कर दिया जो सोशल मीडिया में चर्चा का विषय बन गया है महिला को आगे कर पुलिस कप्तान के विरुद्ध गंभीर साजिश रचने वाले मास्टरमाइंड को बेनकाब करने की जरूरत है वरना यह मास्टरमाइंड इसी तरह से साजिश रच कर लोगों को परेशान करता रहेगा हालांकि इस पर तनिक भी नजर दौड़ाई गई तो महिला को बरगला कर पुलिस कप्तान के विरुद्ध साजिश रचने वाले मास्टरमाइंड का चेहरा बेनकाब होना तय है।

सड़क दुर्घटना में पति की मौत पत्नी गंभीर घायल

अखंड भारत संदेश

अझुवा कस्बे के दंपत्ति ससुराल से वापस लौट रहे थे घर

अझुवा कौशांबी। अझुवा कस्बे के दंपत्ति फतेहपुर जिले के प्रेम नगर से अपाचे बाइक से वापस लौटते वक्त प्रेम नगर के पास लोडर गाड़ी से भिड़ गए हादसे में पति की दर्दनाक मौत हो गयी और महिला गंभीर घायल है घटना की जानकारी जैसे ही परिजनों को लगी परिवार में कोहराम मच गया है घटनाक्रम के मुताबिक संजय मौर्य उम्र तकरीबन 25 वर्ष पुत्र स्व.सत्यनारायण मौर्य निवासी वार्ड न 8 गांधी नगर अझूवा अपाचे मोटरसाइकिल से पत्नी ममता के साथ ससुराल बड़ी बगहा थाना हथगाम गए थे मंगलवार को दंपत्ति हथगांव से से वापस घर अझुवा आ रहे थे जैसे ही बाइक सवार दंपत्ति प्रेमनगर के पास पहुँचे लोडर गाड़ी से आमने सामने वह टकरा गए जिसमे संजय की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई वहीं साथ रही संजय की पत्नी ममता गंभीर रूप से घायल हो गई मौके पर रहे लोगों ने परिजनों और स्थानीय पुलिस को सूचना देते हुए हथगांव अस्पताल भिजवाया है जहां महिला की स्थिति गंभीर बनी हुई है दंपत्ति की शादी अभी 2 माह पहले ही हुई है। आज मंगलवार सुबह ही ससुराल गए थे वापस आते समय में यह हादसा हुआ है।परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

भरवारी रेलवे क्रासिंग पर अंडर ग्राउंड पुल का निर्माण जल्द

अखंड भारत संदेश

अंडरग्राउंड पुल बनाए जाने से कहीं खुशी कहीं गम

भरवारी कौशाम्बी। भरवारी रेलवे फाटक पर लगने वाले लंबे जाम से मुक्ति दिलाने की पहल शुरू हो गई है जल्द ही भरवारी रेलवे फाटक पर अंडरग्राउंड पुल बन सकता है जिले के भरवारी रेलवे क्रासिंग पर लगने वाले भीषण जाम से लोगो को बहुत जल्द राहत मिलने वाली है बिभाग ने सर्वे का काम शुरू कर दिया है।\ जानकारी के मुताबिक भरवारी रेलवे क्रासिंग पर बहुत जल्द रेल अंडर पास ब्रिज (फ्वइ) का निर्माण कराने जा रहा है,इसके लिए सर्वे का कार्य पूरा हो गया है,शासन से आदेश मिलते ही टेंडर सहित अन्य सभी प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।कौशाम्बी जिले के सबसे व्यस्ततम रेलवे क्रासिंग भरवारी में जाम के झाम से लोग कई सालो से परेशान है। भरवारी रेलवे फाटक में लगने वाले जाम के चलते बाइक और कार सवार सहित स्कूली बच्चे और उनकी बस घंटो धूप में खड़ी रहती है,जिससे लोगो को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।रेलवे इस पर बहुत जल्द फ्वइ का निर्माण कराएगा और लोगो को जाम के झाम से मुक्ति मिल जाएगी। इस फ्वइ के निर्माण के दौरान रेलवे क्रासिंग के दोनो तरफ कुछ लोगो के मकानों की क्षति भी हो सकती है जिससे लोगों में गम का माहौल है,रेलवे विभाग अपने फ्वइ के मानक के अनुसार अतिक्रमण को साफ करेगा जिसमे कई लोगो के मकान इसकी जद में आ सकते है जिन्हे नुकसान का भी सामना करना पड़ सकता है।आशा की जा रही है कि 2024 के पहले ही इस फ्वइ का निर्माण शुरू कर दिया जाएगा।

गैगेस्टर एक्ट का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर गैंगेस्टर एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त सचिन सोनकर पुत्र भुल्लन सोनकर थाना कड़ाधाम उम्र 20 वर्ष को चरई चौराहा वहद ग्राम कड़ा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर अभियुक्त कमलेश निषाद पुत्र बंशीलाल निवासी ग्राम सीताराम का डेरा मजरा डेढावल थाना पश्चिम शरीरा को केवट का डेरा थाना पश्चिम शरीरा के पास से एक किलो 400 ग्राम नाजायज गांजा के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

मदहोश होकर सोते रहे बालू के ओवरलोड परिवहन को रोकने के जिम्मेदार!

अखंड भारत संदेश

यमुना बालू घाट से देवी गंज तिराहे तक कैसे पहुंची ओवरलोड बालू ट्रक

कई थाना पुलिस एआरटीओ और खनन अधिकारी नहीं रोक सके बालू लदे ओवरलोड वाहन

कौशाम्बी। यमुना तराई क्षेत्र के बालू घाट से ओवरलोड बालू लेकर निकले तेजगति ट्रक चालक की जल्दबाजी लापरवाही के चलते देवीगंज तिराहे पर बाइक सवार की दर्दनाक तरीके से सड़क हादसे में मौत के बाद बालू ओवरलोड परिवहन रोकने के जिम्मेदारो पर तमाम गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं आखिर यमुना नदी के बालू घाट से ओवरलोड बालू वाहन 50 किलोमीटर का सफर करके कैसे देवीगंज तिराहे तक पहुंच गया रास्ते में पड़ने वाले पुलिस थाने पुलिस चौकी हंड्रेड डायल और ब्यवस्था को लेकर सड़को मौजूद विभिन्न प्रकार के पुलिस फोर्स के साथ-साथ खनन अधिकारी एआरटीओ और उनके सहायकों ने ओवरलोड बालू लदे ट्रक को रास्ते में रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया यदि रास्ते में ट्रक को रोक दिया गया होता तो दुर्घटना ना होती आखिर बालू लेकर जा रहे ओवरलोड ट्रक को ना रोकने के पीछे इन जिम्मेदारों की क्या मंशा है। आखिर कैसे देवीगंज के तिराहे तक ओवरलोड बालू ट्रक पहुंच गया जिससे दुर्घटना हो गई ओवरलोड बालू वाहनों के परिवहन को रोकने के जिम्मेदार क्या पूरी रात मदहोश होकर सोते रहते हैं जिससे ओवरलोड वाहन सड़कों पर बेखौफ तरीके से दौड़ते हैं या फिर ओवरलोड बालू वाहनों से सिस्टम की पूरी सेटिंग हो गई है जिससे बेखौफ तरीके से ओवरलोड वाहन सड़कों पर दौड़ते है और उन पर कई विभाग के अधिकारी कार्यवाही नहीं करते हैं नकारा सिस्टम पर सवाल खड़ा हो रहा है कि सड़कों पर बेखौफ तरीके से दौड़ने वाले बालू लदे ओवरलोड वाहन को प्रतिदिन जिम्मेदार जानबूझकर अनदेखी कर रहे है। नकारा सिस्टम के चलते ओवरलोड बालू वाहन के परिवहन को रोकना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी लगता है नकारा सिस्टम को सुधारना होगा और इन पर कड़ी कार्रवाई करनी होगी योगी सरकार और उनके अधिकारियों को यह मानना होगा कि केवल बार-बार चेतावनी देने से नकारा सिस्टम सुधारने वाला नहीं है।

संपादकीय

बेपरवाही की रेल सुरक्षा

भारत डोगरा

महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि रेल दुर्घटनाओं में जो यात्री घायल होते हैं उनमें से अनेक को दीर्घकालीन इलाज की जरूरत होती है। तुरंत तो इलाज मिल जाता है, पर दीर्घकालीन इलाज उपेक्षित रह जाता है। अनेक अध्ययनों में यह सामने आया है कि कई रेल दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों की चोट व क्षति बहुत गंभीर होती है व इसके लिए बार-बार अस्पताल जाना पड़ सकता है। ऐसे घायल व्यक्तियों के दीर्घकालीन इलाज की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए व इसके लिए भी रेलवे को पर्याप्त संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए। रेल प्रबंधन में सुरक्षा को उच्चतम प्राथमिकता देना आवश्यक है। पिछले एक दशक के औसत को देखें तो भारत में प्रतिवर्ष रेल दुर्घटनाओं में 24,000 व्यक्तियों की मौत होती है, जबकि यूरोपियन यूनियन के सभी देशों को मिलाकर देखें तो भी यह आंकड़ा एक हजार से कम है। रेल सुरक्षा में सुधार की जरूरत को देखते हुए वर्ष 2015-16 में समुचित वित्तीय व्यवस्था हेतु उच्च स्तरीय विमर्श किया गया था। फलस्वरूप पांच वर्ष के लिए 1,54,000 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई जिसमें से 1,19,000 करोड़ रुपए 'राष्ट्रीय रेल संरक्षक कोष' पर खर्च होने थे। वर्ष 2017-18 से यह कोष आरंभ हुआ, पर इसके लिए पहले पांच वर्ष में एक लाख करोड़ रुपए की ही व्यवस्था हो सकी, यानि मूल अनुमान से 19,000 करोड़ रुपए कम। फिर भी 20,000 करोड़ रुपए प्रति वर्ष की राशि का नियोजन तो अगले पांच वर्ष के लिए हो ही गया था व वित्त मंत्री की इस घोषणा का स्वागत भी हुआ था। अब यदि सात वर्ष की स्थिति, 2017-18 से 2023-24 तक, देखें तो पहले पांच वर्ष के वास्तविक खर्च के आंकड़े उपलब्ध हैं व नवीनतम दो वर्षों के संशोधित व वास्तविक बजट अनुमान भी उपलब्ध हैं। इनके अनुसार वास्तविक उपलब्धि 1,40,000 रुपए के स्थान पर 96,000 करोड़ रुपए की रही, यानि 44,000 करोड़ रुपए की कमी रही। इसमें पहले ही हो चुकी 19,000 रुपए की कमी भी जोड़ दें तो 'राष्ट्रीय रेल संरक्षक कोष' में सात वर्षों में 63,000 करोड़ रुपए की कमी रही, यानि प्रति वर्ष 9000 करोड़ रुपए की कमी रही। रेलवे मंत्रालय से जुड़ी संसदीय-समिति ने कहा है कि इस तरह संसाधनों में कमी होते रहने से 'राष्ट्रीय रेल संरक्षक कोष' का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता। उधर 'कंट्रोलर व ऑडीटर जनरल' (कैग) ने वर्ष 2022 की एक रिपोर्ट में ऐसे ही विचार प्रकट करते हुए कहा है कि रेलवे को अपने आंतरिक स्त्रोतों से 'राष्ट्रीय रेल संरक्षक कोष' के लिए बेहतर संसाधन उपलब्ध कराना चाहिए। इसके लिए 'कैग' ने 'राष्ट्रीय रेल संरक्षक कोष' के पहले चार वर्षों का आंकलन करते हुए बताया है कि इन वर्षों में रेलवे को अपने आंतरिक स्त्रोतों से 'राष्ट्रीय रेल संरक्षक कोष' के लिए मात्र 20,000 करोड़ रुपए की व्यवस्था करने के लिए कहा गया था, पर रेल मंत्रालय इसमें से मात्र 21 प्रतिशत की आपूर्ति ही कर पाया,जबकि 79 प्रतिशत की आपूर्ति नहीं हो पाई। इसके अतिरिक्त 'कैग' रिपोर्ट ने यह भी कहा है कि सुरक्षा की उच्चतम प्राथमिकताओं के आधार पर कार्य नहीं हो सका। अतः भविष्य के लिए सही प्राथमिकताओं के आधार पर सुरक्षा कार्य को तेजी से आगे बढ़ाना जरूरी हो गया है।

एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि रेल दुर्घटनाओं में जो यात्री घायल होते हैं उनमें से अनेक को दीर्घकालीन इलाज की जरूरत होती है। तुरंत तो इलाज मिल जाता है, पर दीर्घकालीन इलाज उपेक्षित रह जाता है। अनेक अध्ययनों में यह सामने आया है कि कई रेल दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों की चोट व क्षति बहुत गंभीर होती है व इसके लिए बार-बार अस्पताल जाना पड़ सकता है। ऐसे घायल व्यक्तियों के दीर्घकालीन इलाज की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए व इसके लिए भी रेलवे को पर्याप्त संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए। नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि घायल यात्रियों की सही संख्या के अनुमान में भी सुधार की जरूरत है। वर्ष 2021 में लगभग 18,000 रेल दुर्घटनाएं हुईं जिनमें मात्र 1800 व्यक्तियों को घायल दिखाया गया,यानि 10 दुर्घटनाओं में मात्र एक घायल दिखाया गया। इन आंकड़ों में सुधार होने से भी अधिक लोगों को सहायता मिल सकेगी। ऐसा तो कहीं भी नहीं देखा गया है कि दस रेल दुर्घटनाओं में मात्र एक घायल हो। अभी हाल की उड़ीसा दुर्घटना को देखें तो उसमें घायल लोगों की संख्या मृतकों की संख्या से तीन गुणा अधिक है।

सामान्य तौर पर यह माना जा सकता है कि एक रेल दुर्घटना में औसतन दो व्यक्ति तो घायल होते ही हैं। यदि इस हिसाब से देखा जाए तो वर्ष 2021 में 18,000 रेल दुर्घटनाओं में लगभग 36,000 लाख लोग घायल हुए होंगे, जबकि आंकड़ों में केवल 1800 व्यक्ति ही घायल बताए गए हैं। सवाल यह उठता है कि यदि बहुत से घायल लोगों के आंकड़े रिकार्ड में दर्ज ही नहीं होंगे तो उनको सहायता कैसे मिलेगी, जबकि भारत, दक्षिण-अफ्रीका, अमेरिका व तुर्की में हुए अध्ययनों में यह बताया गया है कि रेल दुर्घटनाओं में प्रायः जो चोट लगती हैं वह बहुत गंभीर होती है और उनमें देर तक इलाज की जरूरत होती है। यानि घायल लोगों के इलाज पर कहीं अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

गीता प्रेस रूपी उजालों पर राजनीति क्यों?

ललित गर्ग

आजादी के अमृतकाल में स्व-संस्कृति, स्व-पहचान एवं स्व-धरातल को सुदृढ़ता देने के अनेक अनूठे उपक्रम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार में हो रहे हैं, उन्हीं में एक है भारत सरकार द्वारा एक करोड़ का गांधी शांति पुरस्कार सौ साल से सनातन संस्कृति की संवाहक रही गीता प्रेस, गोरखपुर देने की घोषणा। 1800 पुस्तकों की अब तक 92 करोड़ से अधिक प्रतियां प्रकाशित करने वाले गीता प्रेस को इस पुरस्कार के लिये चुना जाना एक सराहनीय एवं सूझबूझभरा उपक्रम है। यह सम्मान मानवता के सामूहिक उत्थान, धर्म-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, अहिंसक और अन्य गांधीवादी तरीकों से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया है। लेकिन विडम्बना है कि ऐसे मानवतावादी उपक्रमों को भी राजनीतिक रंग दे दिया जाता है। हर मुद्दे को राजनीतिक रंग देने से राजनीतिक दलों और नेताओं को कितना फायदा या नुकसान होता है यह अलग बात है लेकिन सही बात तो यह है कि ऐसे विवादों का खमियाजा देश को जरूर उठाना पड़ता है।

गीताप्रेस गोरखपुर

ऐसा ही ताजा विवादित बयान कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने इस पुरस्कार को लेकर दिया है। रमेश ने कहा कि गीता प्रेस को गांधी शांति पुरस्कार देना गोडसे और सावरकर को सम्मान देने जैसा है। निश्चित ही यह तो उजालों पर कालिख पोतने के प्रयास है। ऐसे प्रयास अंधेरे सायों से प्यार करने वाले लोग ही कर सकते हैं। ऐसे लोगों की आंखों में किरणें आंज दी जाये तो भी वे यथार्थ को नहीं दे सकते। ऐसे राजनीतिक लोग आकाश में पैबंद लगाना चाहते हैं और सछिद्र नाव पर सवार होकर राजनीति सागर की यात्रा करना चाहते हैं। क्योंकि सब जानते हैं कि गीता प्रेस प्रतिदिन सत्तर हजार प्रतियां प्रकाशित कर घर-घर में धर्म-संस्कृति-राष्ट्रीयता का दीप जला रहा है। अपनी किताबों के माध्यम से समाज में संस्कार परोसने व चरित्र निर्माण का काम भी यह संस्था कर रही है। गीता प्रेस के कामकाज को लेकर आज तक कोई विवाद भी पैदा नहीं हुआ। ऐसी संस्था को लेकर जब यह बयान आता है तो यह भी सवाल उठता है कि क्या जयराम रमेश के इस बयान का कांग्रेस पार्टी समर्थन करती है? यह सवाल इसलिए भी क्योंकि जयराम रमेश कांग्रेस के जिम्मेदार नेता हैं और केन्द्र में मंत्री भी रह चुके हैं।

इस तरह के उद्देश्यहीन, उच्छृंखल एवं विध्वंसात्मक बयान सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता को कमजोर तो करते ही हैं, धर्म, आस्था और संस्कारों को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं को हतोत्साहित भी करते हैं। वैसे भी हर धर्म व उससे जुड़ी संस्थाओं को अपने कामकाज के प्रचार-प्रसार का पूरा हक है। गीता प्रेस के बारे में देश के तमाम बड़े नेताओं और धर्मगुरुओं की राय सकारात्मक ही रही है। संस्था ने सकारात्मकता की एक ओर मिसाल पेश करते हुए किसी प्रकार का दान स्वीकार न करने के अपने सिद्धांत के तहत एक करोड़ रुपए की पुरस्कार राशि लेने से इनकार कर दिया है। साथ ही सरकार से अनुरोध किया है कि वह इस राशि को कहीं और खर्च करे।

गांव जलाने वाला और जलती आग से बचाने वाला- दोनों एक कैसे हो सकते हैं? गीता प्रेस पर दोषारोपण करने वाले एवं उसकी जिस तरह से अतिश्योक्तिपूर्ण तुलना की गयी है, वह आलोचक ही उच्छृंखलता एवं बुद्धिहीनता को दशार्ता है। गांव जलाने वाले और जलती आग से बचाने वाले को कोई मन्दबुद्धि व्यक्ति भी एक नहीं मान सकता। फिर गीता प्रेस जैसे सांस्कृतिक एवं धार्मिक अभियान के साथ इस विसंगतिपूर्ण आलोचना की सोचना ही विध्वंसात्मक सोच है। इस तरह की आलोचना राजनीतिक आग्रह, पूर्वाग्रह एवं दुराग्रह के साथ बुद्धि का दिवालियापन है। हर मामले को राजनीतिक रंग में डुबोने की ताक में रहना राजनेताओं की फितरत-सी बनती जा रही है। लोकतंत्रीय पद्धति में किसी भी विचार, कार्य, निर्णय और जीवनशैली की आलोचना पर प्रतिबंध नहीं है। किन्तु आलोचक का यह कर्तव्य है कि वह पूर्व पक्ष को सही रूप में समझकर ही उसे अपनी आलोचना की छेनी से तराशे। किसी भी तथ्य को गलत रूप में प्रस्तुत कर उसकी आक्षेपात्मक आलोचना करना उचित नहीं है। जिन दलों, लोगों एवं विचारधाराओं का उद्देश्य ही निन्दा करने का हो, उनकी समझ सही कैसे हो? जिसका काम ही किसी अच्छे काम या मन्तव्य को जलील करने का हो, वह सत्य का आईना लेकर क्यों चलेगा?

गीता प्रेस के सौ वर्षों का स्वर्णिम दौर एवं संस्कृति-निर्माण के कार्य कोई कांच का नाजुक घर नहीं है कि आलोचना की बौछार से किरचें-किरचें होकर बिखर जाये। उसने जो संस्कार निर्माण एवं संस्कृति जागरण के सत्य को उजागर किया, वह शताब्दी पहले जितना सत्य था, आज भी उतना ही सत्य है। बल्कि नई परिस्थितियों के साथ उसकी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गयी है। उसकी दूरगामी निगाहों ने अपने युग के पार देखकर जिस सत्य को पकड़ा था, दुस्साहसी कालचक्र उसे किसी भी कोने से खण्डित नहीं कर पाया। उसने तो देश के घर-घर में धर्म की पताका लहराई है, सतातन सत्यों की एक ठोस जमीन दी है, काश! समग्र दृष्टि से विचार करते हुए तथाकथित राजनीतिक लोग इस सिलसिले का सम्मान कर पाते। राजनेताओं को राजनीतिक दलों की कार्यशैली या उनके कार्यक्रमों को लेकर आपत्ति हो सकती है, पर किसी भी निर्विवाद संस्था को बेवजह विवादों में घसीटना अशोभनीय ही कहा जाएगा। यह सही है कि आज के दौर में राजनीतिक दलों व नेताओं की रणनीति वोट बैंक की चिंता और सुर्खियां बटोरने की आतुरता के इर्द-गिर्द घूमती है। लेकिन राजनेताओं से यह तो अपेक्षा की जाती है कि वे बयान सोच-समझकर दें। बयान देकर फिर वापस ले लेने से भी जो नुकसान होता है उसकी भरपाई आसान नहीं होती। राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे अपने नेताओं के लिये बयानों में संयम बरतने की आचार-संहिता लागू करें।

गीता प्रेस की पत्रिका है कल्याण। कल्याण की लोकप्रियता का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि अब तक इस पत्रिका के कई विशेषांकों (पहले अंक) के पाठकों की मांग पर अनेक संस्करण प्रकाशित करने पड़े। चाहे जैसी स्थितियां आईं, कल्याण अपने लक्ष्य, संकल्प व दायित्वबोध के प्रति पूरी तरह सजग रही। भारत बंटवारे का विरोध किया तो जरूरत पड़ने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी मार्गदर्शन किया। भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार द्वारा कल्याण के रूप में रोपा गया पौधा आज वटवृक्ष बन चुका है। लोगों का धर्म-संस्कृति के क्षेत्र में मार्गदर्शन कर रहा है। भाईजी व गांधीजी के बीच प्रेमपूर्ण संबंध थे। ह्यकल्याणह्न का पहला अंक 1926 में प्रकाशित हुआ था, इसमें गांधीजी का लेख भी छपा था। भाईजी यह अंक गांधीजी को भेंट करने गए थे। उन्होंने न सिर्फ कल्याण की प्रशंसा की, बल्कि यह आग्रह भी किया था कि कल्याण या गीताप्रेस से प्रकाशित होने वाली किसी पुस्तक में बाहरी विज्ञापन न प्रकाशित किया जाए, इससे कल्याण व पुस्तकों की शुचिता बनी रहेगी। इसका पालन आज भी गीताप्रेस करता है। कल्याण के विभिन्न अंकों में गांधीजी के लेख छपते रहे। आज भी गांधीजी द्वारा लिखा गया पत्र गीताप्रेस में सुरक्षित रखा गया है। गांधीजी के जीवन पर इस पत्रिका का अनूठा प्रभाव रहा है और उन्हीं के नाम पर दिये जाने वाले पुरस्कार के लिये गीता प्रेस से अधिक उपयुक्त पात्र कोई और हो नहीं सकता, यह बात जयराम रमेश को भलीभांति समझ लेनी चाहिए। सस्ती राजनीतिक वाह-वाही के लिये ऐसे बयानों से जयराम रमेश ने अपनी ही पार्टी एवं उसकी ऐतिहासिक विरासत को आहत किया है।

हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ कब तक?

अशोक

फिल्म आदिपुरुष भगवान राम पर बनी इस फिल्म का देशव्यापी विरोध हो रहा है। कई लोगों को फिल्म के डायलॉग पसंद नहीं आ रहे हैं तो कुछ लोगों को राम बने प्रभास का लुक पसंद नहीं आ रही है। घनी मूंछे, योद्धाओं जैसे शरीर वाले प्रभास में लोगों को भगवान राम की शालीनता खल रही है। आदिपुरुष का विरोध केवल भारत तक सीमित नहीं है। नेपाल में थिएटर मालिकों का कहना है कि जब तक फिल्म के कुछ डायलॉग हटाए नहीं जाते हैं, फिल्म को नेपाल में रिलीज नहीं होने दिया जाएगा। सोशल मीडिया पर लोग कह रहे हैं कि यह फिल्म मूल रामायण का अपमान है, इसमें धार्मिक कथाओं को अलग तरीके से पेश किया गया है। इसे हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ बताया जा रहा है ।

दरअसल यह फिल्म अपने टीजर के लॉन्च के दिनों से ही विवादों के केंद्र में है। लोग इस फिल्म की कॉस्ट्यूम डिजाइन से लेकर संवाद आदायगी तक पर सवाल खड़े कर रहे हैं। कई हिंदू संगठनों ने इस फिल्म पर बैन लगाने की मांग की है। फिल्म पर बैन लगाने को लेकर दिल्ली हाई कोर्ट में एक अर्जी दाखिल की गई है। याचिका में कहा गया है कि सेंसर बोर्ड की ओर से जारी होने वाले सर्टिफिकेट पर रोक लगा दी जाए।

नेपाल में थिएटर मालिक इस बात से नाराज हैं कि आदिपुरुष में सीता मां को भारत की बेटी बताया गया है। काठमांडू मेट्रोपॉलिटन सिटी के मेयर ने मांग की है कि अगर यह लाइन हटाई नहीं जाती है तो फिल्म को रिलीज नहीं होने दिया जाए। फिल्म में एक डायलॉग है 'जानकी भारत की बेटी है।' सीता मां का मायका, माना जाता है कि जनकपुर में है, जो नेपाल में है। इस डायलॉग को लेकर अब सवाल खड़े किए जा रहे हैं। प्रभास इस फिल्म में राम बने हैं। सीता की भूमिका में हैं कृति सैनन और रावण बने हैं सैफ अली खान। सैफ अपने लुक को लेकर ट्रोल हो रहे हैं। लोगों को सबसे ज्यादा ऐतराज फिल्म में किरदारों के लुक पर है। ज्यादातर लोगों को फिल्म के किरदारों का कास्ट्यूम पंसद नहीं आ रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि राम, न तो राम लग रहे हैं, लक्ष्मण का लुक भी मैच नहीं कर रहा है। हनुमान का लुक, रामानंद सागर वाले रामायण से बिलकुल अलग है। लोग, अरुण गोविल के लुक से प्रभास की तुलना कर रहे हैं, जो उनके लुक से बेहद उलट है। यह लोगों को रास नहीं आ रहा है। लोगों का मानना हैं कि सैफ अली खान का रावण वाला लुक भी बेहद बुरा है। फिल्म के टीजर से लेकर ट्रेलर तक पर बवाल हो रहा है। 2022 से ही इस फिल्म पर विवाद जारी है। आदिपुरुष फिल्म के निमार्ता ओम राउत, प्रभास, सैफ अली खान समेत 5 लोगों के खिलाफ पहली बार 2022 में यूपी के जौनपुर में केस दर्ज हुआ। फिल्म पर भगवान राम, हनुमान, सीता और रावण के किरदारों का अभद्र चित्रण करने का आरोप लगा। शिकायतकर्ता ने कहा कि फिल्म धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचा रही है।

आदिपुरुष के खिलाफ यहाँ मुंबई में भी शिकायत दर्ज हुई है। आरोप है कि यह फिल्म रामचरित मानस के पात्र राम के किरदार को गलत तरीके से दर्शा रही है। हिंदू धर्म समाज ने भी धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने का आरोप लगाया है। कुछ लोगों को किरदारों के जनेऊ न पहनने पर भी ऐतराज है। यह फिल्म रिलीज होने से पहले ही विवादों में घिरी है। कृष्ण देव, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े हैं। उन्होंने फिल्म का ट्रेलर देखने के बाद कहा कि इस फिल्म के सभी पात्रों को बेमन से चुना गया है। सुपरस्टार के भरोसे फिल्म हिट कराने की कोशिश की गई है। रावण से लेकर हनुमान तक के किरदार ऐसे हैं जो देखने में विदूषक लग रहे हैं। सबके कपड़े, रामायण में वर्णित किरदारों के स्वरूप से बिलकुल भी नहीं मिलते हैं। दर्शकों का मानना है कि धार्मिक फिल्म को भी बंबइया फिल्म बना दिया है। ऐसा लग रहा है कि सलमान खान की फिल्मों के डायलॉग चल रहे हैं। एक सीन में भगवान हनुमान का डायलॉग है- कपड़ा तेरे बाप का, तेल तेरे बाप का, जलेगी भी तेरे बाप की।' दूसरे सीन में अशोक वाटिका के रखवाले हनुमान से कहते हैं- तेरी बुआ का बगीचा है क्या जो हवा खाने चला आया। फिल्म में 'जो हमारी बहनों को हाथ लगाएंगे उकी लंगा देंगे, आप अपने काल के लिए कालीन बिछा रहे हैं और मेरे एक सपोले ने तुम्हारे शेषनाग को लंबा कर दिया, अभी तो पूरा पिटारा भरा पड़ा है' जैसे डालॉग हैं। लोगों का कहना है कि ये डायलॉग किसी टिपिकल बॉलीवुड फिल्म वाले हैं, इन्हें फिल्म में नहीं लेना चाहिए था। इस फिल्म में कई आपत्तिजनक शब्द हिंदू धर्म के बारे में कहा गया है।मयार्दापुरुषोत्तम राम के साथ और रामायण की मूल भावना के साथ मजाक किया गया है। सवाल है कि क्यों बार-बार हिंदू धर्म से जुड़ी फिल्मों में ही आस्था और भावनाओं से खिलवाड़ किया जाता है। यह फिल्म सेंसर बोर्ड से पास होकर आई है।लोगों का घुस्सा सेन्सर बोर्ड पर भी है । लोगों का कहना है वर्तमान में सेंसर बोर्ड या अन्य नियामक संस्थाओं की कानूनी औपचारिक बाध्यताओं से स्वतंत्र- ओटीटी प्लेटफार्म एक ऐसे अड्डे एवं हथियार के रुप में उभरा है जिसमें फिल्मों व वेबसीरीज के माध्यम से हिन्दू विरोध, देवी देवताओं एवं धर्म को अपमानित करने की खेप पर खेप इन्टरनेट के माध्यम से लगातार पहुंचाई जा रही है।हिन्दू धर्म से नफरत करने वाले फिल्म निमार्ता-निर्देशक-पटकथा लेखक इस बेलगाम अनियंत्रित प्लेटफार्म के द्वारा लगातार ऐसी फिल्में / वेबसीरीज बनाकर परोस रहे हैं जिनके निशाने पर सिर्फ और सिर्फ हिन्दू धर्म एवं उसकी आस्था,धार्मिक स्थल व प्रतीक हैं। इन सभी का तंत्र बेहद शातिर है, जो जानबूझकर हिन्दू धर्म की आस्था एवं भावनाओं से खिलवाड़, अपमानित करता है। इनमें बौध्दिक व अर्बन नक्सली, अकादमिक लफ्फाज,छद्म पत्रकार, राजनैतिक तोपची,देशद्रोही वामपंथियों का गिरोह व विभिन्न माफियाओं समेत भारत विरोधी अराजक तत्वों की गैंग शामिल है जो विविध तरीके से एक-दूसरे के लिए माहौल निर्मित करती है। हिन्दू धर्म विरोध, अपमान के पीछे इनकी वही नफरत है जो इनके विभिन्न कार्यकलापों, बयानों से प्रायः सामने आती रहती है। हिन्दू धर्म व उसकी व्यवस्था तथा आस्था इनके लिए आसान सा लक्ष्य है,क्योंकि इन्हां यह बखूबी पता होता है कि हिन्दू अपने धर्म, आस्था के प्रति उतना दृढ़ नहीं है और मुंहतोड़ जवाब नहीं देता है। साथ ही जो इनके कुकृत्यों के विरोध में आता है उसे ये अपने 'अभिव्यक्ति' शब्द के जुमले से ढंकने का प्रयास करते हैं। इन फिल्म निमार्ताओं, पटकथा लेखकों, फिल्म निर्देशकों, प्रसारणकताओं का जो तंत्र होता है वह एक वैचारिकी के घेरे से बंधा हुआ व इन्हीं लक्ष्यों को प्रसारित करने के उद्देश्य के लिए ही सिनेमा में आया हुआ है कि- उन्हें हर हाल में 'हिन्दू-हिन्दुत्व' के विरोध,धार्मिक आस्था को चोट पहुंचाने के लिए काम करना है, जिसे वे सिनेमा के माध्यम से आसानी के साथ साध लेते हैं।

चाहे फिल्मों के नाम हों याकि उसके दृश्य, धारावाहिक, कॉमेडी, वेबसीरीज या अन्य दृश्य सामग्री जिन्हें विवादित कहा गया हो तथा जिन पर समाज ने आपत्ति दर्ज करवाकर विरोध किया हो। उन सभी का गहराई से विश्लेषण करने पर सबके मूल में एक बात ही सामने आती है कि फिल्म निमार्ता,निर्देशकों ने इसके पीछे खास रणनीति के तहत काम किया है। वे जानबूझकर ऐसे नाम, दृश्य, डॉयलॉग इत्यादि उसमें सम्मिलित करते हैं जिससे 'विवाद' की स्थिति निर्मित हो। अब ऐसा करने के पीछे यही है कि प्रथमतः वह विवाद के द्वारा अपनी फिल्म, सीरीज का बिना पैसे के प्रचार प्रसार कर लेते हैं। दूसरा यह कि जिस विशेष उद्देश्य के अन्तर्गत उन्होने फिल्म,धारावाहिक, वेबसीरीज में जानबूझकर 'विवादित' चीजें जोड़ी हैं। उन सबको व्यापक स्तर पर फैलाने में भी सफल हो जाते हैं। क्योंकि जब कोई चीज चर्चा में होती है तब लोग जिज्ञासावश उसे देखते हैं कि-आखिर! इस फिल्म या धारावाहिक में ऐसा क्या है कि जिससे इतना बवाल मचा हुआ है। बस यहीं से वे अपने उद्देश्य में सफल हो जाते हैं। मुफ्त में उनकी फिल्म, धारावाहिक, वेबसीरीज का प्रचार और उनका कुत्सित मंसूबा दोंनों एक साथ सध जाते हैं। इसके साथ जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है वह यह कि इन फिल्म या धारावाहिक, वेबसीरीज निमार्ताओं द्वारा विवाद उत्पन्न करने के उपरांत शाब्दिक भ्रमजाल के सहारे 'माफीनामा' व फिल्म, वेबसीरीज के टाईटल, दृश्य, डॉयलॉग में मामूली फेरबदल कर बड़ी ही चतुराई के साथ अपना दामन बचा लेने में सफल हो जाते हैं। उनकी हिन्दू विरोधी मानसिकता से भरी 'फिल्म और नैरेटिव' दोनों हिट हो जाते हैं और वे आर्थिक वारा-न्यारा करने के साथ-साथ हिन्दू भावनाओं को आहत कर मदमस्त रहते हैं। हालांकि पिछले कई वर्षों से हिन्दू समाज इस पर जाग उठा है और उसने अकादमिक, सिनेमाई षड्यंत्र को समझकर प्रतिकार करने का साहस जुटाया है,लेकिन इस साहस में स्थायी उबाल व दृढ़ता नहीं दिखती।यदि धर्म की रक्षा करनी है तो इन सबकी जड़ों में प्रहार करना होगा अन्यथा ये सिनेमाई विधर्मी इसी तरह से अपमानित एवं आस्था से खिलवाड़ करते रहेंगे। यदि धार्मिक भावनाओं को आहत करने एवं हिन्दू धर्म के विरोध में बनाई गई फिल्मों, धारावाहिकों, वेबसीरीज के निमार्ता, निर्देशक,लेखक, अभिनय टीम के विरूद्ध हिन्दू समाज समूचे देश में मुकदमे दर्ज करवा कर कानूनी कार्रवाई करवाने का अभूतपूर्व साहस दिखलाने के साथ ही राजनैतिक हुक्मरानों की कॉलर पकड़कर उनकी जवाबदेही तय करवाने का काम करते तो किसी की इतनी मजाल ही न होती कि वह हिन्दू धर्म को अपमानित कर सके।

घर में नहीं है दाने, अम्मा चली भुनाने

राज सक्सेना

मोदी के विरोध में विपक्षी एकता की सबसे ज्यादा जल्दी दिल्ली के मुख्य मंत्री केजरीवाल और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को है। कुल मिलाकर स्थिति यह है किकांग्रेस के मौन विरोध के दृष्टिगत भी केजरीवाल 23जूनको बिहार में विपक्षी नेताओं की बैठक में भाग लेने और उसमें दिल्ली प्रशासनिक अधिकारियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग के विषय में निर्णय को लेकर बहुत आशान्वित हैं। शायद उन्हें नितीश कुमार ने विश्वास दिला दिया है कि वे कांग्रेस को मना लेंगे, और नीतीश कुमार दक्षिण में तमिलनाडु जिसका बिहार, उत्तर भारत और दिल्ली की राजनीति में कोई भी साधारण दखल तक नहीं है, को किसी भी तरह, अपने खेमे में मोदी विरोध के चलते लाने के पूरे प्रयास कर रहे हैं और इसके लिए वे उन्हें आमंत्रित करने के लिए चेन्नई भी जा रहे हैं।

जब तक यह पंक्तियां आपके सामने पहुंचेंगी आप को नीतीश कुमार के चेन्नई पहुंचने की खबर मिल चुकी हो सकती है।विपक्षी एकता के प्रयासों में दक्षिण के किसी राज्य की नीतीश की यह पहली यात्रा होगी।जिसमें वे मुख्यमंत्रीस्टालिन से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उन्हें आमंत्रित करेंगे। हालांकि स्टालिन को पूर्व में निमंत्रण भेजा जा चुका है किंतु नीतीश कुमार कोई भी खाना इस विषय में खाली रखने के मूड में नहीं हैंऔर वे हर विपक्षी नेता से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उसे आमंत्रित कर रहे हैं। इस विषय में यह विशेष उल्लेखनीय है कि नीतीश कुमार की बिहार में स्वयं में जनता के बीच कोई खास अच्छी स्थिति नहीं है। उनसे अधिक तो आरजेडी के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव की है जिसके साथ मिलकर नीतीश कुमार की जेडीयू ने गठबंधन कर सरकार बनाई है।

अगर इन दोनों दलों के पिछले चुनाव के आंकड़ों पर नजर डालें तो 2024 में इन दोनों दलों की स्थिति भाजपा के मुकाबले या यूं कहें कि राजग के मुकाबले कुछ कमजोर ही है बेहतर नहीं है।2024 में भाजपा को चुनौती पेश करने के लिए सबसे ज्यादा हाथापाई बिहार में हो रही है लेकिन बिहार में इस गठबंधन के लिए मुख्य संगठक माने जाने वाले राजद का खुद का गिरता वोट बैंक चिंता का कारण बन सकता है। मुस्लिम यादव (एमवाई)समीकरण यानी 31 प्रतिशतवोट बैंक पर मजबूत पकड़ के दावे के बावजूद पिछले तीन लोकसभा चुनावों में राजद का वोट प्रतिशत 20 से 15 प्रतिशत के बीच सिमटता रहा है। राजद को 2009 में 19.3 प्रतिशत, 2014 में 20.5 प्रतिशत और 2019 में 15.7 प्रतिशतही वोट मिले थे। गठबंधन के सहयोगियों के साथ भी वह अपने इसवोट बैंक की सीमा को पार करने में सफल भीनहीं हो सका।

कुल मिलाकर मुस्लिम यादव समीकरण के बल पर 2004 के लोकसभा चुनाव में बिहार में 30.7 प्रतिशतवोट के साथ 22 सीटें जीतकर राजद ने केंद्र में यूपीएसरकार बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। राजद की सहयोगी रही कांग्रेस को भी 4.5 प्रतिशतवोट के साथ तीन सीटें, लोजपा को 8.2 प्रतिशत वोट के साथ चार सीटें मिली थी। बिहार में यूपीए45 प्रतिशत से अधिक वोटों के साथ 40 में से 29 सीटें जीतने में सफल रहा था लेकिन 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस से अलग होकर लड़ना राजद के लिए भारी पड़ा और उसका वोट शेयर 19.3 प्रतिशत पर सिमट गया जबकि राजद की सहयोगी लोजपा 6.5 प्रतिशतवोट पाने में तो सफल रही लेकिन एक भी सीट नहीं जीत पायी। राजदसे अलग होकर कांग्रेस 2004 की तुलना में दोगुने से भी अधिक वोट शेयर 10.3 प्रतिशत प्राप्त करने के बावजूद एक सीट कम जीत पायी। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा और जदयू के अलग होने के बाद राजद के लिए खोये हुए वोट बैंक को हासिल करने का सुनहरा मौका था लेकिन इसमें मामूली सी वृद्धि के साथ वह 2009 के चुनाव 19.3 प्रतिशत से 20.5 प्रतिशत पर ही पहुंच पाया सीटों में कोई अभिवृद्धि सम्भव नहीं हुयी।

अल्पसंख्यकों के योजनाओं पर मोदी की टिप्पणी के मायने

गौतम चौधरी

अभी हाल ही के दिनों में गुजरात की एक विशाल सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट किया कि धर्मनिरपेक्षता का सही अभ्यास समुदायों के विकास में है। अपने भाषण में उन्होंने यह भी जोड़ा कि कल्याणकारी योजनाओं में बिना किसी भेद-भाव के सभी को समान रूप से शामिल करना और लाभान्वित करना है, चाहे उनकी धार्मिक, जाति और क्षेत्रीय संबद्धता कुछ भी हो। उक्त सभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि इसके अलावा, किसी भी संप्रदाय के व्यक्तियों के हक के वितरण में किसी भी प्रकार के कदाचार या पूर्वाग्रह का उन्मूलन ही धर्मनिरपेक्षता की वास्तविक अभिव्यक्ति है। प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीब व्यक्तियों की संतुष्टि और आत्म-आश्वासन तब बढ़ जाता है जब उनकी मूलभूत जरूरतें पर्याप्त रूप से पूरी हो जाती हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने की अपनी योजना पर भी स्पष्टिकरण प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि इस प्रयास को पूरा करने के लिए, सरकार ने उन वंचित समूहों के लिए सकारात्मक कार्रवाई की दिशा में कार्य योजनाएं तैयार की हैं, जो आर्थिक रूप से धीमी गति से बढ़ रहे हैं। विशेष रूप से, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति जैसे अन्य वंचित समूहों की तुलना में मुस्लिम अल्पसंख्यक का आर्थिक विकास थोड़ा कमजोर है।

कल्याणकारी योजनाओं में आत्मनिर्भरता और गतिशीलता के लिए आवास, शिक्षा, बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल और माइक्रो फाइनेंस सहायता प्रदान करना शामिल है। मोदी ने अपने कार्यकाल में अल्पसंख्यक कल्याण के लिए चलाए जा रहे कई योजनाओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के माध्यम से, सरकार ने प्रासंगिक कदम उठाए हैं। इस समाज के लिए नया सवेरा, सीखो और कमाओ, नई मंजिल, नई रोशनी, हमारी धरोहर, नई उड़ान, गरीब नवाज रोजगार योजना और शादी मुबारक योजना सहित कई योजनाओं को लागू किया है। मुस्लिम विशेष रूप से नई उड़ान पहल के लिए लक्षित समुदाय हैं, जो संघ लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग और राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित प्रारंभिक परीक्षा को प्रभावी ढंग से उत्तीर्ण करने वाले अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

दो के कब्जे से दस लीटर महुआ शराब व 13 क्वार्टर देशी शराब बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने दो के कब्जे से दस लीटर महुआ शराब व 13 क्वार्टर शराब बरामद की है।

मंगलवार को सरधुआ थाने के दरोगा अनिल कुमार गुप्ता की टीम ने फूलचन्द्र पुत्र नत्थू चमार निवासी औदहा के कब्जे से दस लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा अनिल कुमार गुप्ता व सिपाही ललित सोनी शामिल रहे।

इसी क्रम में मारकुण्डी थानाध्यक्ष अनिल कुमार की टीम ने रामा वर्मा पुत्र नत्थू निवासी पुरानी बस्ती थाना मझगवां जिला सतना मप्र को 13 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में थानाध्यक्ष अनिल कुमार, सिपाही शुभम द्विवेदी शामिल रहे।

पुलिस ने दबोचे तीन वांछित

सत्यमेव जयते
कोतवाली कर्वी
जनपद - चित्रकूट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में दरोगा राकेश मौर्य की टीम ने वांछित झुल्लू उर्फ रोहित गुप्ता पुत्र छेदीलाल व छोटेलाल उर्फ मोतीलाल पुत्र स्व नर्वदा प्रसाद निवासी गोकुलपुरी को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा राकेश मौर्य, सिपाही दिनेश यादव शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह की टीम ने पॉक्सो एक्ट के वांछित निंदा यादव पुत्र बिन्दुलाल यादव निवासी बरद्वारा को गिरफ्तार किया। टीम में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह, दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी, दीवान अरविन्द सोनी, दीवान वीरेन्द्र कुमार, सिपाही लालू यादव शामिल रहे।

क्षेत्र की जनता को न परेशान करें विद्युत कर्मी: विधायक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। समाजवादी पार्टी के कर्वी विधायक अनिल प्रधान ने विद्युत की भारी कटौती से परेशान जनता को निजात दिलाने को विद्युत विभाग के नगर कार्यालय का औचक निरीक्षण किया।

मंगलवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने सवेरे सवा दस बजे अधिशाषी अभियंता विद्युत नगर कार्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण में उन्हें कर्मचारी गिरधारीलाल, जयकरन व सुनील कुमार तथा अशोक कुमार और संजय कुमार मौजूद मिले। बाकी कर्मचारी गैरहाजिर रहे। सभी पटलों पर ताला लटका था। उपस्थित रजिस्टर जिस कक्ष में रखा था, वह कक्ष भी बन्द था।

विधायक ने फोन से जिलाधिकारी एवं अधिशाषी अभियंता को सूचित किया। विधायक ने कहा है कि विद्युत व्यवस्था को लेकर क्षेत्र के लोगों को परेशान न किया जाये। गैरहाजिर कर्मियों के खिलाफ कार्यवाही कर उन्हें अवगत करायें।

चुप्पी तोड़ो खुलकर बोलो चैपाल में एसपी ने महिलाओं को किया जागरूक, सरैंया में लगी महिला चौपाल

महिला हेल्प डेस्क
शक्ति
1090 181 1076 112 1098 102

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला की अध्यक्षता में सीओ मऊ राजकमल की मौजूदगी में महिलाओं/बालिकाओं में सुरक्षा एवं विश्वास का माहौल कायम रखने की गरज से जारी मिशन शक्ति अभियान के तहत मानिकपुर थाने के सरैंया कस्बे के प्राथमिक विद्यालय में महिला चैपाल लगाई।

मंगलवार को चैपाल में एसपी श्रीमती वृन्दा शुक्ला ने कहा कि अपने प्रति होने वाले छोटे से छोटे अपराध एवं अन्याय के खिलाफ आवाज उठायें। व्यक्तिगत हालात के अनुसार पुलिस हर सम्भव मदद करेगी। महिलाओं के प्रति होने वाले घरेलू, लैंगिक एवं साइबर अपराधों के प्रति सचेत और जागरूक हों। महिलायें अपराध का शिकार बनती हैं तो उस स्थिति में पुलिस तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। इस बाबत महिलाओं व बालिकाओं को जागरूक किया।

उन्होंने पुलिस सेवाओं को बेहतर बनाने को सुझाव मांगे। क्षेत्र की महिला सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं से भी महिलाओं को अवगत कराया। जिन पर आवश्यक कार्यवाही को पुलिस अधीक्षक ने सम्बन्धित को निर्देश दिये। मिशन शक्ति के तहत चल रहे विशेष अभियान में सभी थाना क्षेत्रों में महिला चैपाल लगाई जा रही हैं। अगले पूरे सप्ताह में चैपाल लगाई जायेंगी। महिला चैपाल में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर वीर प्रताप सिंह, पीआरओ प्रदीप कुमार पाल, चैकी प्रभारी सरैंया चन्द्रमणि पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

शासनादेश का उल्लंघन: सीएमओ पर उठे सवाल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के मुख्य सचिव के शासनादेश के तहत 13 मई 2022 में समूह ग के ऐसे कर्मचारी जिनका एक ही पटल में तीन वर्ष पूरे हो गए हैं। उनके पटल परिवर्तन के आदेश जारी हुए थे। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा भूपेश द्विवेदी ने कर्मचारियों का पटल बदला तो था, लेकिन कुछ समय बाद पुनः कर्मचारियों का तबादला पुराने स्थान पर किया जा रहा है। शासन के आदेश की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। मंगलवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी के कारनामों की चर्चा कार्यालय के बाहर तेजी से चल रही थी। ऊपरी कमाई के फेर में सीएमओ पटल परिवर्तन किए कुछ फार्मासिस्टों को पुनः पुराने स्थान में भेजकर शासन के आदेश को ठेंगा दिखा रहे हैं। कुछ जनप्रतिनिधियों ने कहा कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सरैंया में पुराना फार्मासिस्ट पैसा देकर पहाड़ी से पुनः सरैंया पहुंच गया। इसके अलावा जिले में अन्य कोई फार्मासिस्ट नहीं था। ऐसे में सीएमओ पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

श्याम गुप्ता की जागीर नहीं है रामलीला भवन

नजूल भूमि पर बना रामलीला भवन किसी की बपौती नहीं, नगर पालिका का है

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय के पुरानी बाजार स्थित रामलीला भवन को लेकर श्याम गुप्ता पर तमाम सवाल उठ खडे हुए। जब रामलीला भवन श्याम गुप्ता का न कभी था और न है, तब श्याम गुप्ता को रामलीला से मोह के पीछे भी तमाम सवाल हैं। ऐसे में उसने कुछ हिन्दूवादी संगठनों को बरगलाकर डीएम के समक्ष प्रदर्शन का स्वांग किया है। हकीकत जब हिन्दूवादी संगठनों को पता चलेगी तो वे खुद श्याम गुप्ता से किनारा कर लेंगे।

मंगलवार को रामलीला भवन का मुद्दा अचानक गरमा गया है। रामलीला भवन को उदरपूर्ति/व्यापार का अड्डा बनाने वाले के पेट में मरोड क्यों उठ रही है। हकीकत कुछ यूं है कि छह अप्रैल 1953 को गवर्नर साहब बहादुर उप्र ने सेक्रेटरी रामलीला समाज पुरानी बाजार कर्वी को शर्तों पर दिया था। शर्तों में तय था कि बैनामा नजूल भूमि पर इमारत इस गरज से बनाई है कि इस इमारत में रामलीला, धार्मिक-सामाजिक कार्य होंगे। ये इमारत किराये व कारोबार के लिए पूरी तरह वर्जित रहेगी। श्याम गुप्ता ने शर्तों का पूरी तरह जमकर उल्लंघन किया है। ऐसे में रामलीला की इमारत स्वतः राज्यपाल/नोटीफाइड एरिया/नगर पालिका परिषद कर्वी को लेने का हक बनता है। नजूल भूमि पर बनी रामलीला का इमारत नगर पालिका की मंजूरी के बिना कोई नया निर्माण नहीं हो सकता। मरम्मत के लिए भी मंजूरी जरूरी है। ऐसे में इस भवन को नगर पालिका अपने अधिकार में लेता है तो यह शर्तों के अनुकूल होगा।

अब सवाल उठता है कि श्याम गुप्ता ने नगर पालिका को अपनी जागीर क्यों समझ लिया। इसके पीछे भी तमाम कारण काम कर रहे हैं। प्रमुख कारण ये है कि रामलीला भवन से ही श्याम गुप्ता की कमाई का मुख्य जरिया है। इसीलिए रामलीला से उन्हें इतना मोह है। हिन्दूवादी संगठनों को बरगलाकर मंगलवार को डीएम के सामने प्रदर्शन का स्वांग किया है। मन्दाकिनी स्वच्छता समिति के अध्यक्ष राकेश केशरवानी ने भी श्याम गुप्ता पर तमाम सवाल खडे किये हैं। उन्होंने कहा कि श्याम गुप्ता ने रामलीला के 18 टन के गेटों को गायब कर दिया है। आरएसएस के जितेन्द्र ने भी श्याम गुप्ता को अपराधी प्रवृत्ति का करार दिया है। कहा है कि उसके खिलाफ आपराधिक मामले चल रहे हैं। 15 वर्षों से रामलीला भवन को कमाई का अड्डा बनाये है। रामलीला भवन को हिन्दू भावनाओं से जोडकर असमाजिक लोगों को लेकर शहर का माहौल खराब करने की मंशा पाले है। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द को श्याम गुप्ता के क्रियाकलापों की जांच कराकर कडी कार्यवाही करना चाहिए।

विभिन्न समस्याओं को लेकर भाकपा ने सौंपा ज्ञापन

बुल्डोजरगिरी नहीं होगी बर्दाश्त

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाकपा जिला सचिव मंडल ने का अमित यादव एड जिला सचिव की अगुवाई में जिलाधिकारी संबोधित पांच सूत्रीय ज्ञापन एडीएम को सौंपा।

सोमवार को सौंपे ज्ञापन में का अमित यादव ने कहा कि पूरे जिले में हर घर नल योजना के तहत सड़कों को ध्वस्त किया है। बरसात होने पर ग्रामीणों का आवागमन दूभर हो जाएगा। खराब सड़कों को तत्काल ठीक कराया जाये। गर्मी में पानी की किल्लत देखते हुए नलों में पानी की व्यवस्था की जाये। योजना में व्याप्त भ्रष्टाचार की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। राजपूत विद्यालय के पास शोभा सिंह के पुरवा में नाली निर्माण कराकर जलभराव से होने वाली जनहानि व संक्रामक बीमारियों की रोकथाम को तत्काल रोका जाये। बरसात से पहले जिले की नालियों की सफाई कराई जाए। कोठी तालाब की सीढ़ियों का जीर्णोद्धार करायें। शासन जितने आवास दे रही है उससे ज्यादा गरीबों के आवास पर बुल्डोजरगीरी कर ध्वस्त किया जा रहा है। भाकपा बर्दाश्त नहीं करेगी। गरीब का घर रोड़ में आ रहा है तो उसे कहीं आवास दें।

ज्ञापन देने में पूर्व विधायक का राम प्रसाद सिंह, का कमलेश प्रसाद, का संदीप कुमार पाण्डेय, का कमलेश कुमार यादव, का शिवनरेश सिंह मौजूद रहे।

योग दिवस के बाद डिप्टी सीएम की सभा को बनाये सफल: खरे

0 डिप्टी सीएम की सभा में शामिल होंगे 850 बूथों के कार्यकर्ता

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजपा ने 21 जून को योग दिवस व बांदा जिले में सूबे के डिप्टी सीएम बृजेश पाठक की जनसभा की तैयारी बैठक जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे की अध्यक्षता में की। सांसद आरके सिंह पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्रा, पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय मौजूद रहे।

मंगलवार को जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे ने बताया कि 21 जून को प्रति वर्ष की भांति योग दिवस मनाया जायेगा। सभी कार्यकताओं को भाग लेना है। 850 बूथों पर योग दिवस मनाया जायेगा। योग दिवस के बाद सभी कार्यकताओं को बांदा में डिप्टी सीएम की जनसभा में शामिल होना है। डिप्टी सीएम के कार्यक्रम को सफल बनाने को मंडल सह योजना बनायी गयी।

सांसद आरके पटेल ने कहा कि डिप्टी सीएम की जनसभा को सफल बनाने को सभी को प्रयास करना है। सभी बूथों में सम्पर्क कर लोगों को जनसभा में चलने का आवाहन किया। जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव ने कहा कि योग हमारे देश मे अनादिकाल से चला आ रहा हैं। मोदी ने योग दिवस के रुप में पूरी दुनिया में मनाने को 21 जून को विश्व योग दिवस घोषित किया है।

पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्रा ने कहा कि योग दिवस और जनसभा मे सभी की सहभागिता हो, इसके लिये मंडल अध्यक्षों को सहेज दें। बैठक में भाजपा नेता पंकज अग्रवाल, ब्लाक प्रमुख अरविंद मिश्रा, सुशील द्विवेदी, देव त्रिपाठी, दिनेश तिवारी, चेयरमैन नरेन्द्र गुप्ता, अश्वनी अवस्थी, राजेश जयसवाल, बृजेश पांडे, हीरो मिश्रा, रवि गुप्ता, विनीत द्विवेदी, अभिषेक ओझा, अंजू वर्मा, राजेश्वरी द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

जन्मजात 70 फीसदी विकलांग से सचिव ने मांगी रिश्वत

विकलांग ने डीएम को लिखा पत्र

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक के लौढियामाफी गांव के लुल्ला पुत्र छोटा ने सचिव पर आवास देने के नाम पर दस हजार रुपये की रिश्वत मांगने का आरोप लगाया है। जन्म से 70 फीसदी विकलांग लुल्ला ने कहा कि ग्राम पंचायत में आधा दर्जन से ज्यादा विकलांग आवास आए थे। उसे देने के नाम पर सचिव उत्कर्ष सिंह ने दस हजार रुपए की मांग की थी।

मंगलवार को मानिकपुर ब्लाक के लौढियामाफी गांव के जन्म से 70 फीसदी विकलांग लुल्ला ने कहा कि जो पैसा वह कई दिनों पहले सचिव को दे चुके हैं, सचिव कहते हैं कि खर्च हो गया। अगर आवास चाहिए तो धूप में आते-जाते हैं। पुनः उसे पैसा लगेगा। उसके इंकार पर सचिव ने उसे जाति सूचक शब्दों का प्रयोग कर भद्दी-भद्दी गालियां देते हुए भगा दिया। कहा कि जहां जाना हो, जिससे शिकायत करना हो कर दो, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह कोई साधारण आदमी नहीं है। इस जिले में उसकी जाति के लोगों की राजनीति में अच्छी पकड़ है। उनसे कह-सुनकर अपना मामला निपटा लूंगा। मामला चाहे जो भी हो। अभी दो माह पहले इन्हीं विकलांग आवासों के चक्कर में ग्राम पंचायत लौढियामाफी के सचिव जगदीश पटेल को निलम्बित किया गया था, लेकिन वह जुगाड लगाकर पुनः बहाल होकर इसी ब्लाक में नौकरी कर रहा है।

विकलांग लुल्ला के आरोप हैं कि सचिव उत्कर्ष सिंह पुराने सचिव के इशारे पर विकलांगों को हक नहीं दे रहा। ग्रामीणों को जबरियां परेशान किया जा रहा है। आवास देने के नाम पर रुपयों की मांग की जा रही है। जिलाधिकारी को लिखे पत्र में लुल्ला पुत्र छोटा ने सचिव के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है। इस बारे में सचिव उत्कर्ष सिंह ने बताया कि आवासों पर कार्य पूर्ति लग चुकी है। आवास देने में दिक्कत हो रही है। पैसा मांगने और गाली-गलौज के आरोप निराधार हैं। पूरे मामले से बीडीओ को अवगत कराया है।

निषाद पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष साथियों समेत कांग्रेस में शामिल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला कांग्रेस अध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने कांग्रेस कार्यालय में निषाद पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष राज नारायण निषाद को कांग्रेस की सदस्यता दिलाई। जिलाध्यक्ष ने कांग्रेस में शामिल होने वाले वाले सदस्यों को कांग्रेसी पट्टी पहनाकर स्वागत किया।

मंगलवार को कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने नये कांग्रेसियों का परिवार में स्वागत किया। राज नारायण निषाद ने साथियों समेत कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। निषाद ने कहा कि वे राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से प्रभावित होकर कांग्रेस से जुड़ रहे हैं। पूरी निष्ठा के साथ जिले में कांग्रेस को मजबूत करने के काम करेंगे। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी आम जनता के हितों के लिए कांग्रेस संघर्ष करती है। साथियों के साथ मिलकर जिले में कांग्रेस को मजबूत करने के काम करेंगे।

निषाद के कांग्रेस में शामिल होने पर कांग्रेस के पूर्व प्रत्याशी रंजना बरातीलाल पांडे, जिला सचिव विजयमणि त्रिपाठी, कुलदीप मिश्रा, अवधेश करवरिया, यमुना शुक्ला, महेंद्र सिंह, कामता द्विवेदी समेत कांग्रेसियों ने खुशी जताई। इस मौके पर रामबचन निषाद, रामकरण, राजेंद्र, रमाशंकर, महेंद्र निषाद, आशीष कुमार मिश्रा, उमेश, रामबाबू, संजय आदि मौजूद रहे।

जिले में पहली बार जिला अस्पताल में हुआ कुल्हे का प्रत्यारोपण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला अस्पताल में पहली बार एक ग्रामीण के कूल्हे का प्रत्यारोपण किया गया। शिवरामपुर के मछरिहा गांव के भोला प्रसाद (65) के बायें कुल्हे की हड्डी टूट गई थी। इससे वह चलने-फिरने में असमर्थ थे। उनके कुल्हे का प्रत्यारोपण कर सफल ऑपरेशन हुआ।

सोमवार को जिला अस्पताल के मुख्य चिकित्साधीक्षक डॉ सुधीर कुमार शर्मा, निस्चेतक डा पीडी चैधरी, अर्थोसर्जन डा रोहित गुप्ता, अर्थोसर्जन डा एके मोहन, स्टाप नर्स नम्रता कटियार, ओटी टेक्निशियन अनगपाल व जीत, वार्ड बॉय दीपक मिश्रा के सहयोग से ग्रामीण के कुल्हे का सफल प्रत्यारोपण किया।

नकली गुटखा बनाने वाले दो को पुलिस ने दबोचा, कोतवाली पुलिस की सफलता

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नकली तम्बाकू और गुटखा का कारोबार करने वाले दो लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जिनके पास से ब्रांडेड कम्पनी के गुटखे भी बरामद हुए हैं।

मंगलवार को जिले में ब्रांडेड कम्पनियों के गुटखे और तम्बाकू का रैपर, लोगो लगाकर बाजार में नकली गुटखा बेचने की शिकायत मिलने पर नोयडा के धर्मपाल सत्यपाल लिमिटेड कम्पनी के एमडी चन्द्रशेखर चित्रकूट में बीते सोमवार को कई दुकानों में जाकर गुटखे और तम्बाकू उत्पाद खरीदे थे। जिसमें सामने आया कि कर्वी में कुछ लोग स्थानीय स्तर पर कम्पनी के रैपर और लोगो का दुरूपयोग करते हुए ग्राहकों के साथ धोखा कर रहे हैं।

जिसके बाद उन्होंने इसकी शिकायत पुलिस अधीक्षक से की थी। उन्होंने बताया कि तुलसी जर्दा का नकली माल बनाकर बेचा जा रहा है। इससे फर्म को लाखों रुपये का नुकसान व कंपनी की क्वालिटी पर प्रभाव पड़ रहा है। इसे लेकर एसपी वृंदा शुक्ला ने कोतवाली पुलिस की दो टीमें गठित कराकर जांच कराई। सोमवार की देर शाम को शहर के बल्दाऊगंज स्थित रोहित कुमार गुप्ता पुत्र रामदुलारे गुप्ता और द्वारिकापुरी निवासी सुरेंद्र साहू साहू पुत्र पंजीलाल की दुकान घर में छापा डाला। जहां से ब्रांडेड कम्पनी के 1500 से अधिक पाउच बरामद हुए। जिसके बाद कर्वी कोतवाली प्रभारी गुलाब त्रिपाठी ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। नकली माल के साथ दो दुकानदारों के पकड़े जाने की जानकारी होते ही शहर में हडकंप मच गया।

कामर्शियल के बाद प्रशासन के निशाने पर गौशाला, अशोक गुप्ता की इमारतों पर प्रशासन की भृकुटी टेढी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय के धुस मैदान के आगे राजाघाट किनारे अशोक गुप्ता की गौशाला की जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के निर्देश व एडीएम न्यायिक वन्दिता श्रीवास्तव के आदेश पर प्रशासन की टीम पैमाइश को पहुंची। टीम ने बारीकी से एक-एक बिन्दु की पैमाइश की है। पैमाइश में बाधा पहुंचाने को जिला बार एसोसिएशन के कुछ अधिवक्ता भी पहुंचे, टीम ने अधिवक्ताओं को बताया कि शासन के आदेश पर पैमाइश की जा रही है।

मंगलवार को कर्वी के नायब तहसीलदार रामानन्द मिश्रा की अगुवाई में कानूनगो, लेखपाल व प्राधिकरण के जेई आनन्द प्रकाश द्विवेदी आदि को लेकर टीम राजाघाट स्थित गौशाला पहुंची। गौशाला में बारीकी से प्रत्येक बिन्दु की पैमाइश की गई। पैमाइश में देखा गया कि कितना निर्माण हुआ है व कितने में कार्य चल रहा है। जांच टीम को अंदेशा है कि बडे पैमाने पर नजूल भूमि पर कब्जाकर गौशाला आदि का निर्माण कराया गया है। जांच टीम ने तकरीबन तीन घंटे तक पैमाइश का कार्य मौके पर किया।

जांच टीम के मुखिया रामानन्द मिश्रा ने बताया कि आख्या तैयार की जा रही है। आख्या में भारी कमियां मिलने की सम्भावनाये हैं। आख्या जिलाधिकारी को भेजी जा रही है। जिलाधिकारी के निर्देश के बाद अग्रिम कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने बताया कि जांच में नजूल भूमि के साथ अन्य लोगों की भूमि के भी कब्जा होने के आसार हैं। ऐसे में जिलाधिकारी से निर्देश मिलने पर ही कार्यवाही निर्धारित की जायेगी।

चीनी राष्ट्रपति से मिले अमेरिकी विदेश मंत्री, रिश्तों में सुधार पर हुई बातचीत

बीजिंग। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की है। दोनों नेताओं में अमेरिका और चीन के रिश्तों में सुधार पर बातचीत हुई है। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन इस समय चीन के दौरे पर हैं। इस दौरान ब्लिंकन और जिनपिंग की मुलाकात की प्रतीक्षा की जा रही थी। सोमवार को यह मुलाकात हुई। जिनपिंग ने गर्मजोशी से ब्लिंकन से मुलाकात की। 'ग्रेट हॉल ऑफ द पीपल' में हुई इस बैठक से मात्र एक घंटे पहले अमेरिकी विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने इस संबंध में घोषणा की। बैठक में अमेरिका और चीन के रिश्तों में सुधार पर चर्चा हुई। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के पदभार ग्रहण करने के बाद से ब्लिंकन चीन की यात्रा करने वाले सर्वोच्च स्तर के पहले अमेरिकी अधिकारी हैं। वह पिछले पांच वर्षों में बीजिंग की यात्रा करने वाले पहले अमेरिकी विदेश मंत्री हैं। बाइडन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने पिछले साल बाली में एक बैठक में जल्द ही ब्लिंकन की यात्रा पर सहमति व्यक्त की थी। यह फरवरी में होने वाली थी लेकिन अमेरिका के आसमान में चीनी जासूसी गुब्बारे का मामला सामने आने के बाद इसमें देरी होती गई। ब्लिंकन की यात्रा के दौरान चीन की ओर से मांग की गई कि अमेरिका चीन से खतरे के सिद्धांत को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना बंद करे, चीन के खिलाफ लगाए गए अवैध एकतरफा प्रतिबंध हटाए, प्रौद्योगिकी के स्तर पर चीन के विकास के दमन को बंद करे और चीन के आंतरिक मामलों में मनमाने तरीके से हस्तक्षेप करने से बचे।

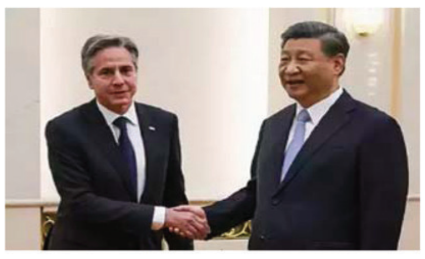

कनाडा पुलिस को असिनिबाइन नदी के पास मिला शव; लापता भारतीय छात्र का होने की आशंका

टोरंटो। कनाडा में पुलिस को असिनिबाइन नदी के पास एक शव मिला है। पुलिस का कहना है कि ये शव बीते सप्ताह मैनिटोबा शहर से लापता हुए भारतीय छात्र का विषय पटेल का है। हालांकि उसकी पहचान की अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मैनिटोबा प्रांत में ब्रैंडन सिटी के पूर्व में असिनिबाइन नदी और राजमार्ग 110 पुल के पास आपातकालीन जांच कर्मियों को एक शव मिला था। जांच कर्मियों का मानना है कि शव असिनिबाइन कम्युनिटी कॉलेज के छात्र विषय पटेल का है। बता दें कि विषय पटेल भारत के गुजरात का है। वह शुक्रवार सुबह से लापता हो गया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, विषय पटेल के परिजनों ने शनिवार सुबह ब्रैंडन पुलिस को उसके लापता होने की सूचना दी थी। बताया जा रहा है कि विषय पटेल के परिवार के सदस्यों ने भी इलाके में उसकी खोज की थी। इसके बाद रविवार शाम असिनिबाइन नदी के पास उसके कपड़े पाए गए। इसके बाद आपातकालीन सेवा कर्मियों ने इलाके की तलाशी ली और उन्हें एक शव मिला था। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय छात्र विषय पटेल को एक ग्रे होंडा सिविक कार में अपने घर से निकलते हुए देखा गया था। हालांकि अधिकारियों ने अभी तक मृत व्यक्ति की पहचान की पुष्टि नहीं की है। इस बीच, एक चश्मदीद ने पुलिस को बताया कि उन्होंने पटेल को रिवरबैंक डिस्कवरी सेंटर मैदान की ओर जाते हुए देखा था।

श्रीलंका में इस साल सड़क हादसे में 1,043 लोगों की मौत

कोलंबो। श्रीलंका के परिवहन मंत्री लसांथा अलगियावन्ना ने कहा है कि इस साल अब तक देश में कुल 8,875 सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं, जिनमें 1,043 लोगों की मौत हुई। समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने मंत्री के हवाले से कहा कि इन दुर्घटनाओं में शामिल अधिकांश वाहन बस, मोटरसाइकिल और तिपहिया वाहन थे। दुर्घटनाओं की संख्या को कम करने के लिए एक सहयोगी कार्य योजना शुरू की गई है। मंत्री ने कहा कि पश्चिमी प्रांत में 18 मई को शराब या नशीली दवाओं के प्रभाव में वाहन चलाने वाले ड्राइवरों की पहचान करने के लिए एक पायलट कार्यक्रम शुरू किया गया था। मंत्री ने कहा कि पिछले हफ्ते, कुल 1,781 ड्राइवरों को ड्रग्स के प्रभाव में ड्राइविंग के संदेह में परीक्षण किया गया।

पुलिस के अनुसार, श्रीलंका में 2022 में करीब 19,740 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 2,485 लोग मारे गए।

फ्रांस के राष्ट्रपति ने रग्बी क्लब में पी बीयर, वीडियो सामने आने के बाद हो रही तीखी आलोचना

पेरिस। वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद फ्रांसिसी राष्ट्रपति को आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। वहीं वीडियो के बाद फ्रांस में इसे लेकर बहस भी छिड़ गई है।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रां का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वह एक रग्बी क्लब में बीयर पीते नजर आ रहे हैं। इसे लेकर फ्रांस में तीखी बहस छिड़ गई है। दरअसल वीडियो में दिख रहा है कि फ्रांस के राष्ट्रपति एक बार में ही बीयर की पूरी बोतल पीते दिख रहे हैं और वहां मौजूद अन्य लोग उन्हें बीयर पीते हुए चीयर कर रहे हैं। इसे लेकर बहस छिड़ गई है कि राष्ट्रपति शराब के सेवन और मर्दानगी का भौंडा प्रदर्शन कर रहे हैं।

राष्ट्रपति का वीडियो वायरल होने के बाद छिड़ी बहस

राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रां टोलोज रग्बी टीम के ड्रेसिंग रूम पहुंचे थे, जहां उन्होंने महज 17 सेकेंड में बीयर की पूरी बोतल खत्म कर दी। राष्ट्रपति की इस वीडियो पर सोशल मीडिया में खूब टिप्पणी की जा रही है। फ्रांस की एक सांसद ने इसे राजनीतिक नेतृत्व द्वारा मर्दानगी का भौंडा प्रदर्शन करार दिया है। कुछ लोग राष्ट्रपति का समर्थन भी कर रहे हैं। कुछ लोगों का कहना है कि राष्ट्रपति एक रोल मॉडल हैं और उन्हें देश के लोगों के साथ उदाहरण पेश करना चाहिए और स्वस्थ जीवनशैली और खानपान की आदतों को बढ़ावा देना चाहिए। उल्लेखनीय है कि इमैनुएल मैक्रां फ्रांस की शराब इंडस्ट्री के समर्थक माने जाते हैं और एक बार उन्होंने कहा था कि वह हर दिन लंच और डिनर के साथ शराब का सेवन करते हैं।

नेपाल में प्रचंड के नेतृत्व में माओवादियों सहित 4 दलों ने बनाया 'समाजवादी मोचा'

काठमांडू। नेपाल में प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल प्रचंड के नेतृत्व वाली सीपीएन (माओवादी सेंटर) समेत चार पार्टियों ने समाजवादी मोर्चा बनाने का ऐलान किया है। इसका ऐलान सोमवार को काठमांडू में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान किया गया। मोर्चा बनाने की घोषणा करते हुए नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड ने कहा कि देश में बदलाव के खिलाफ सिर उठाने वालों के खिलाफ 'समाजवादी मोर्चा' मजबूती से आगे आएगा। उन्होंने बताया कि मोर्चा शांति प्रक्रिया की बाकी गतिविधियों का जवाब देगा। प्रचंड ने कहा कि उनकी भारत यात्रा से नेपाल ने ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने दावा किया कि देश हित में सफल भारत यात्रा के बाद विरोधी डरे हुए हैं। समाजवादी मोर्चा में माओवादियों के अलावा उपेंद्र यादव के नेतृत्व वाली जनता समाजवादी पार्टी (जेएसपी), माधव कुमार नेपाल के नेतृत्व वाली सीपीएन यूनाइटेड सोशलिस्ट (यूएस) और नेत्र विक्रम चंद बिप्लव के नेतृत्व वाली नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएन) को शामिल किया गया है। मोर्चे में शामिल जेएसपी एकमात्र गैर-कम्युनिस्ट पार्टी है। बाकी तीन पार्टियां कम्युनिस्ट हैं। मोर्चे के तीन दलों का संसद में प्रतिनिधित्व है। मोर्चा में शामिल सीपीएन एमके की 32, जेएसपी की 12 और सीपीएन यूएस की 10 सीटें मिलाकर 54 सीटें हैं। मोर्चे ने चार पेज का समझौता ज्ञापन भी तैयार किया है।

'शाही परिवार की बात को समझना लोगों के लिए मुश्किल'; प्रिंस हैरी से अनबन के बीच बड़े भाई विलियम का बयान

वाशिंगटन। ब्रिटेन के राजपरिवार में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। ड्यूक ऑफ ससेक्स प्रिंस हैरी और प्रिंस ऑफ वेल्स प्रिंस विलियम की अनबन जगजाहिर है। वहीं, ब्रिटेन में किंग चार्ल्स III के राज्याभिषेक से पहले राजपरिवार को जनता के विरोध का सामना करना पड़ा था। इस बीच, प्रिंस ऑफ वेल्स प्रिंस विलियम ने कहा है कि शाही परिवार की बात को समझना लोगों के लिए कभी-कभी कठिन होता है। एक इंटरव्यू में उन्होंने यह दावा किया। इसके अलावा इसमें उन्होंने यूनाइटेड किंगडम में बेघर लोगों के लिए किए जा रहे अपने कामों के बारे में भी बताया। इंटरव्यू में प्रिंस ऑफ वेल्स प्रिंस विलियम ने बेघर लोगों की समस्याओं को खत्म करने और उन्हें घर मुहैया कराने के लिए अपने पांच साल की योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हम सभी बहुत काम कर रहे हैं। इस दौरान, ड्यूक ऑफ ससेक्स के साथ चल रही अनबन को लेकर कहा कि कभी कभी यह देखना मुश्किल होता है कि हमारा परिवार क्या करता है और हम क्या करते हैं। प्रिंस विलियम ने आगे कहा कि वह लोगों की मदद कर सकते हैं और वे ऐसा करना जारी रखेंगे।

आगे उन्होंने अपने सार्वजनिक आवास अभियान के बारे में भी जानकारी साझा की। उन्होंने प्रिंस जॉर्ज, प्रिंस लुइस और प्रिंसेस शार्लोट को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि तीनों बड़े होकर इस बारे में गहराई से जानें। उन्होंने बेघर लोगों के लिए जा रहे कामों के बारे में कहा कि मुझे लगता है कि जब मैं इसे उनकी स्कूली शिक्षा के साथ संतुलित कर सकता हूं, तो वे निश्चित रूप से इसके संपर्क में आएंगे। अपने पुराने दिनों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि जब हम लंदन में थे तो हम नियमित रूप से सुपरमार्केट के बाहर बैठे लोगों को देखते थे और हम इसके बारे में बात करते थे। तब बच्चों ने भी सड़क पर रहने वाले लोगों को लेकर उनसे सवाल किया था। पूछा कि वे वहां क्यों रह रहे हैं।

प्रिंस विलियम ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह हमारे सभी हितों में है, यह करना सही काम है। उन्होंने कहा कि हममें से कुछ बहुत भाग्यशाली हैं, हममें से कुछ को थोड़ी मदद की जरूरत है। हममें से कुछ को थोड़ा और करने की जरूरत है जहां हम दूसरों की मदद कर सकें उनके जीवन में सुधार करें।

गौरतलब है कि प्रिंस विलियम की यह टिप्पणी उनके भाई, ड्यूक ऑफ ससेक्स के साथ चल रही अनबन और पिछले महीने उनके पिता किंग चार्ल्स III के राज्याभिषेक से पहले राजशाही का लोगों द्वारा विरोध किए जाने के बीच आई थी। किंग चार्ल्स III के राज्याभिषेक के समय भी सामने आया था कि विलियम नहीं चाहते थे कि प्रिंस हैरी यानी उनके छोटे भाई को राजतिलक समारोह में आमंत्रित किया जाए।

न्यूजीलैंड के तीन चीनी रेस्टोरेंट्स में कुल्हाड़ी से हमला, चार को जख्मी करने वाला गिरफ्तार

ऑकलैंड। न्यूजीलैंड के ऑकलैंड में एक व्यक्ति ने तीन चीनी रेस्टोरेंट्स में लगातार हमला किया और कुल्हाड़ी से मारकर चार लोगों को जख्मी कर दिया। बाद में पुलिस ने हमलावर को गिरफ्तार कर लिया है।

ऑकलैंड के चीनी रेस्टोरेंट झांगलियांग मालातांग में रात नौ बजे के एक आसपास एक व्यक्ति घुसा। वह व्यक्ति कुल्हाड़ी लिये हुए था। उसने वहां मौजूद लोगों पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। लोग चिल्लाए तो वह भागा और फिर दूसरे चीनी रेस्टोरेंट यूस डंपलिंग किचन में घुस गया। वहां भी उसने कुल्हाड़ी से रेस्टोरेंट में मौजूद लोगों पर हमला किया। यहां शोर मचने और लोगों के इकट्ठा होने पर वह बाहर निकल गया और हाथ में कुल्हाड़ी लिए हुए तीसरे चीनी रेस्टोरेंट माया हॉटपॉट में पहुंचा। वहां भी वह रेस्टोरेंट में मौजूद लोगों पर कुल्हाड़ी से हमला करने लगा। एक प्रत्यक्षदर्शी के मुताबिक वह अपने दोस्त के साथ माया हॉटपॉट में खाना खा रही थी, तभी एक व्यक्ति उसकी दोस्त के पास आया और हमला कर दिया। उसने बताया कि इस घटना को देखकर वहां मौजूद सभी लोग खड़े हो गए। उनमें से एक चिल्लाकर पूछा तुम ये क्या और क्यों कर रहे हो? इसके बावजूद वह नहीं माना। बाद में पुलिस ने आकर उसे पकड़ा। इन हमलों में चार लोग घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल में भर्ती काराय गया। घायलों में से तीन की हालत गंभीर बनी हुई है।

YUE'S DUMPLING
POLICE EMERGENCY POLICE EMERGENCY

न्यूजीलैंड पुलिस ने इस मामले में एक 24 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। उसे लोगों को गंभीर रूप से शारीरिक नुकसान पहुंचाने के मामले में कोर्ट में पेश किया जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को भारत की जरूरतः साबा कोरोसी

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष साबा कोरोसी ने कहा है कि आज का भारत बेहद मजबूत है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत जैसे मजबूत और बेहतर प्रतिनिधि की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि सुरक्षा परिषद दशकों पहले हमें विरासत में मिली। तब भारत सशक्त देशों में शामिल नहीं था। भविष्य निश्चित रूप से अतीत से बहुत अलग होगा है। आज का भारत बिलकुल अलग है। वह शक्तिशाली है। अपूर्व क्षमता से भरा हुआ है।

साबा कोरोसी ने कहा कि सदस्य देशों की धारणा है कि परिषद को एक बेहतर प्रतिनिधि की आवश्यकता है। उनकी (साबा कोरोसी) राय में भारत से बेहतर कोई दूसरा नहीं हो सकता। भारत विश्व कल्याण में अपना योगदान दे सकता है।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में योग दिवस पर शामिल होने पर कोरोसी ने कहा कि वह कुछ महीने पहले नई दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी से मिले थे। वो दूरदृष्टि और रणनीतिक सोच रखने वाले नेता हैं। वह उनसे मिलकर बेहद प्रभावित हुए। दुनिया के बेहद सम्मानित नेताओं में से एक नरेन्द्र मोदी का संयुक्त राष्ट्र में स्वागत है।

संयुक्त सत्र के संबोधन में पीएम मोदी का स्वागत करेंगे ये सांसद; व्हाइट हाउस में डिनर के लिए भी आमंत्रण

वाशिंगटन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संयुक्त राज्य अमेरिका की अपनी पहली राजकीय यात्रा के लिए दिल्ली से रवाना हो चुके हैं। वे वहां 22 जून को अमेरिकी संसद के साझा सत्र को संबोधित करेंगे। इस दौरान, उनके साथ 'हिंदू कॉकस' बनाने की अपनी योजना का एलान करने के बाद चर्चा में आए भारतीय अमेरिकी सांसद श्री थानेदार भी रहेंगे। इसके अलावा, मिशिगन के 13वें कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट का प्रतिनिधित्व करने वाले पहली बार के डेमोक्रेटिक सांसद को पीएम

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

व्हाइट हाउस में होने वाले डिनर के लिए भी मिला है निमंत्रण

पीएम मोदी की यात्रा को लेकर भारतीय अमेरिकी सांसद ने कहा कि वह और उनकी पत्नी शशि प्रधानमंत्री मोदी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह प्रधानमंत्री के लिए एक ऐतिहासिक घटना है। मुझे आशा है कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका-भारत संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में भी कदम उठाएंगे। इस दौरान उन्होंने व्हाइट हाउस में होने वाले डिनर में सपरिवार आमंत्रित करने के लिए आभार भी जताया। उन्होंने कहा कि वे इसे पाकर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। यह निमंत्रण सार्वजनिक सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए उनके समर्पण के लिए एक प्रतीक के रूप में है।

यूएन मुख्यालय में करेंगे योग

विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने पीएम के अमेरिका-मिस्र दौरे की जानकारी देते हुए कहा कि पीएम मोदी 21-23 जून तक अमेरिका के दौरे पर रहेंगे। पीएम के आधिकारिक दौरे की शुरुआत 21 जून की सुबह न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय में योग दिवस समारोह से होगी। वह कई बड़े नेताओं से मुलाकात भी करेंगे।

राजकीय यात्रा से पूर्व अमेरिका में भारी उत्साह

पीएम मोदी की अमेरिकी यात्रा से पहले भारतीय-अमेरिकियों के एक बड़े हिस्से में खुशी और उत्साह का माहौल है। सैकड़ों भारतवंशी देश के प्रमुख स्थानों पर एकत्र हुए और मोदी के समर्थन में नारेबाजी की। वाशिंगटन डीसी व उसके आसपास के क्षेत्रों में सैकड़ों भारतीय-अमेरिकी एकता का संदेश देने के लिए राष्ट्रीय स्मारक के पास जुटे व जुलूस निकाला।

मिस्र दौरा : अल-हकीम मस्जिद जाएंगे पीएम

अमेरिका के अपने दौरे के बाद पीएम 24-25 जून को मिस्र जाएंगे। मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी के निमंत्रण पर यात्रा कर रहे हैं। वे यहां 11वीं सदी की वोहरा समुदाय की अल-हाकिम मस्जिद जाएंगे। वह यहां प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मिस्र के लिए लड़ते हुए बलिदान देने वाले भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि भी अर्पित करेंगे। साथ ही कई समझौतों पर हस्ताक्षर भी करेंगे।

इजरायली सैनिकों के साथ फलस्तीनी चरमपंथियों से संघर्ष में पांच की मौत, 90 घायल

वेस्ट बैंक। इजरायल और फलस्तीनी चरमपंथियों के बीच ताजा घटनाक्रम में पांच फलस्तीनियों की मौत हो गई है। यह संघर्ष वेस्ट बैंक के जेनिन शहर की सड़कों पर हुआ। गोलीबारी में एक नाबालिग समेत पांच फलस्तीनियों की मौत हो गई, जबकि करीब 90 लोग घायल हुए हैं। फलस्तीनी अधिकारियों ने यह जानकारी दी। संघर्ष के दौरान फलस्तीनी चरमपंथियों ने इजरायली सैन्य वाहन के नजदीक धमाका किया, जिसके बाद इजरायल ने अपने फंसे सैनिकों को निकालने के लिए वायुसेना का इस्तेमाल किया। इजरायली सेना ने बताया कि घटना में उसके सात सैनिक घायल हुए हैं। इजरायली सेना के अनुसार, तड़के दो वांछित उग्रवादियों को पकड़ने के लिए जेनिन शरणार्थी शिविर पर छापेमारी की गई। इस दौरान उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। फलस्तीनी चरमपंथियों ने बताया कि इजराइली सैनिकों के बख्तरबंद वाहन को उन्होंने विस्फोटकों से उड़ा दिया, जिससे कई वाहन बेकार हो गए और सैनिक उसी में फंस गए।

इजराइली सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल रिचर्ड हेच्ट ने बताया कि वेस्टबैंक में चरपंथियों द्वारा सड़क किनारे बम लगाने की घटना ''बहुत ही असामान्य और नाटकीय'' है। उन्होंने कहा कि इससे भविष्य की सैन्य रणनीति प्रभावित हो सकती है। शुरुआती गोलीबारी के घंटों बाद सैनिकों को वहां फंसे कर्मियों को निकालने के लिए भेजा गया, जो पांच खराब हो चुके वाहनों में फंसे थे। उन्होंने इसे 'बचाव अभियान' करार दिया। इजरायली सेना बहुत ही कम अवसरों पर वेस्ट बैंक में विमानों का इस्तेमाल करती है। इजरायली मीडिया के मुताबिक वर्ष 2000 के शुरुआत के बाद पहली बार फलस्तीन के वेस्टबैंक में विमान का इस्तेमाल किया गया। उल्लेखनीय है कि जेनिन शरणार्थी शिविर लंबे समय से चरमपंथियों का गढ़ रहा है और कई बड़े संघर्षों का गवाह बना है।

टाइटैनिक का मलबा पर्यटकों को दिखाने वाली पनडुब्बी, अटलांटिक महासागर में लापता

अटलांटिक महासागर। पर्यटकों को विशालकाय जहाज टाइटैनिक का मलबा दिखाने वाली पनडुब्बी अटलांटिक महासागर में लापता हो गई है। इसकी पुष्टि करते हुए पनडुब्बी का संचालन करने वाली निजी कंपनी ओशनगेट ने बताया कि पनडुब्बी दक्षिण-पूर्वी कनाडा के तट से लापता हो गई है। ओशनगेट कंपनी ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा कि पनडुब्बी लापता होने के बाद उसमें सवार लोगों को बचाने के लिए सभी विकल्पों पर ध्यान रखा जा रहा है। हालांकि, अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि पनडुब्बी पर कितने लोग सवार थे।

रिपोर्ट के अनुसार, तटरक्षक बल ने खोज और बचाव अभियान शुरू कर दिया है। ओशनगेट ने एक बयान में कहा कि पनडुब्बी के साथ संपर्क फिर से स्थापित करने के हमारे प्रयासों में हमें कई सरकारी एजेंसियों और डीप सी कंपनियों से मिली व्यापक सहायता के लिए आभारी है। कंपनी की वेबसाइट के अनुसार वर्तमान में 2023 के पांचवें टाइटैनिक मिशन का संचालन कर रही है, जो पिछले सप्ताह से शुरू होकर गुरुवार को समाप्त होने वाली थी। इस अभियान की लागत प्रति व्यक्ति 250,000 डॉलर है।

ओशियानेट की वेबसाइट के अनुसार, ये यात्रा सेंट जॉन, न्यूफाउंडलैंड से शुरू होती है और ये अटलांटिक में लगभग 400 मील की दूरी तय तक जाती है। इस पनडुब्बी में एक समय में करीब पांच लोग ही सवार हो सकते हैं, जो करीब दो घंटे का सफर तय करने के बाद टाइटैनिक के मलबे तक पहुंच पाते हैं। टाइटैनिक जहाज साल 1912 में अपनी पहली यात्रा के दौरान एक हिमखंड से टकराकर डूब गया था। उस समय टाइटैनिक में सवार करीब 1,500 से अधिक लोग मारे गए थे।